भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 18 | उदयपुर मंगलवार 01 अक्टूबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकसाहित्य संरक्षण-संवर्धन के समाधान

- डॉ. विद्याविन्दु सिंह -

लोकसाहित्य वह है जिसमें लोक जीवन के अनुभव, विचार, समस्याएँ, सुख-दु:ख और इन सबके समाधान लोक मानव द्वारा सहज, सुगम और मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त होते रहे हैं। लोकसाहित्य विश्व की समस्त भाषाओं में मिलता है जिसमें अपने देश, अपनी संस्कृति, विचारधारा, धर्म-दर्शन, सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ जीवनशैली तथा मानव जीवन के समस्त संस्कारों के चित्र होते हैं। इसमें मानवीय परिवेश और मनुष्य के चारों तरफ फैला हुआ प्राकृतिक परिवेश सहज रूप से व्यक्त होता है साथ ही मनुष्य द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में जीवन व्यवहार और अनुभवों को इतनी विविधता मिलती है कि लोकसाहित्य का महत्व स्वत: स्पष्ट हो जाता है।

आदिम युग से लेकर वर्तमान समय तक के उत्थान-पतन, जय-पराजय के चित्र इसमें सुरक्षित होते हैं इसीलिए लोकसाहित्य का संकलन, संरक्षण और सवंर्धन विशेष महत्व रखता है। यह कार्य अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है। यह एक व्यक्ति के प्रयास के साथ ही सामूहिक प्रयास की भी माँग करता है। प्रत्येक भाषा का लोकसाहित्य अपना विशिष्ट महत्व रखता है। उसकी विभिन्न बोलियों, भाषाओं में सोंधी मिट्टी की जो महक होती है।

लोकसाहित्य के अध्ययन करने वाले कोई दावा नहीं कर सकते कि यही शुद्ध रूप है या शुद्ध भावार्थ है क्योंकि लोकसाहित्य की परिवर्तनशील क्षमता उसे नित-नूतन स्वरूप देती रहती है और युग की माँग के अनुसार उसमें निहित व्यंग्यार्थ भी नये-नये भाव व्यक्त कर सकते हैं। लोकसाहित्य की ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझ करके ही उस क्षेत्र के लोकसाहित्य का निहितार्थ समझा जा सकता है।

हर क्षेत्र के व्रत-त्योहारों और संस्कारों से जुड़े लोकसाहित्य में वहाँ की सांस्कृतिक परम्परा और जीवन अनुभव होता है। भौगोलिक वातावरण और हलचलें उसे प्रभावित करती रहती हैं किन्तु लोकसाहित्य का एक विस्तृत फलक भी है जो अन्तर्प्रान्तीय, अन्तर्देशीय है और उसे सम्पूर्ण विश्व की एकता का दस्तावेज भी कहा जा सकता है। इन समस्त दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए और इनकी अनन्त संभावनाओं की आशा के साथ इस क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता है। लोकसहित्य की सर्वकालिकता, सार्वभौमिकता स्वयंसिद्ध है। यह उस लोक जीवन के स्वभाव को व्यक्त करता है जो अपनी परम्पराओं का प्रवर्तक भी है और अनुयायी भी। सबसे महत्वपूर्ण बात लोकसाहित्य की यह है कि इसका मंगल भाव सर्वोपरि है। यह सत्य के जय की घोषणा करता है। लोकसाहित्य के अध्ययन करने से पहले लोक शब्द का अर्थ जान लेना आवश्यक है।

ऋग्वेद के एक श्लोक का अर्थ है कि विष्णु की नाभि से अंतरिक्ष, सिर से स्वर्ग, चरणों से भूमि, कान से दिशाओं और लोकों की सृष्टि हुई। इस दृष्टि से देखें तो 'लोक', 'फोक' का अनुवाद नहीं है। लोक में आलोक शब्द का निहितार्थ है जो प्रकाशित होने का अर्थ बोध कराता है। अवधी में 'लौकत' शब्द देखने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह लोक दिखता भी है और दिखाता भी है।

लोकसाहित्य अतीत से लेकर भविष्य तक सर्वत्र और सर्वदा व्याप्त विधा है। यह अतीत का दस्तावेज भी है और भविष्य का दिशावाहक भी। यह अपनी जड़ों से जुड़े रहने का अनुराग और संकल्प देता है। इसमें इतिहास की घटनाएँ भी रोचक ढंग से प्रस्तुत होती हैं और लोक साहित्यकार अपनी समझ और आवश्यकतानुसार अथवा सुनी-सुनाई कहानियों के रूपकों की स्मृति के प्रभाव से अपने ढंग से प्रस्तुत करता है। कहीं-कहीं अतिश्योक्ति भी मिलती है किन्तु वह अतिश्योक्ति लोक को प्रेरणा देने या रोचकता लाने के लिए होती है। उसमें आम आदमी का दृष्टिकोण इतिहास या ऐतिहासिक पुरुषों के प्रति व्यक्त होता है जो परम्परा के द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संशोधन-परिवर्धन के साथ आगे बढ़ता रहता है।

कहावत है कि इतिहास स्वयं को दुहराता रहता है। यह दुहराना लोकसाहित्य में नये-नये रूप, आकार लेकर आता है। भारतीय संस्कृति का आधार वेदों को माना जाता है। चारों वेदों में वह सब कुछ है जो ज्ञान की किसी भी शाखा को पूर्णता देता है। पराधीनता के संत्रास काल में वैदिक नियमों को विस्मृत और उपेक्षित कर दिया गया था किन्तु लोक विरासत में यह परम्परा अक्षुण्ण रूप से सतत् प्रवहमान रही है। लोकसाहित्यकारों ने वेदों-पुराणों के ज्ञान के अपने अनुभव को नये ढंग से प्रस्तुत किया और नये-नये मिथक रचे। ये मिथक, ये अभिप्राय लोकसाहित्य को विशेष पहचान देते हैं।

> ऋग्वेद के एक श्लोक का अर्थ है कि विष्णु की नाभि से अंतरिक्ष, सिर से स्वर्ग, चरणों से भूमि, कान से दिशाओं और लोकों की सृष्टि हुई। इस दृष्टि से देखें तो 'लोक' 'फोक' का अनुवाद नहीं है। लोक में आलोक शब्द का निहितार्थ है जो प्रकाशित होने का अर्थ बोध कराता है।
> लोकसाहित्य चेतना का साहित्य है। यह चेतना समकालीन परिस्थितियों के दबाव से आती रही है। भक्ति आन्दोलन में लोकभाषाओं में लिखा गया साहित्य भी इसी का प्रमाण है। यह दबाव लोक भी अनुभव करता रहा है और समय-समय पर अभिव्यक्ति भी होती रही है। 1857 और 1947 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय की ललकार और पराधीनता की पीड़ा को लोकसाहित्य ने जो स्वर दिया वह सदैव अविस्मरणीय और प्रेरक रहेगा।

चाहे भाषा या संस्कृति को लें, वैदिक विचार अपने मूल स्वरूप में आज भी लोकसाहित्य की धरोहर बने हुए हैं। धर्म और दर्शन की विविध परतें हैं जो भारतीय संस्कृति की सही पहचान कराने में सक्षम हैं। इनमें ऐसे सूत्र हैं जो केवल राष्ट्र को ही नहीं पूरे विश्व को जोड़े रहने में सक्षम भूमिका निभा सकते हैं। यह जुड़ाव केवल मनुष्य का मनुष्य के साथ नहीं बल्कि चर-अचर, सम्पूर्ण सृष्टि को एक रागात्मक सम्बन्ध में जोड़ता हुआ मनुष्य को उसके मनुष्यत्व की पहचान कराता रहता है।

लोकसाहित्य चेतना का साहित्य है। यह चेतना समकालीन परिस्थितियों के दबाव से आती रही है। भक्ति आन्दोलन में लोकभाषाओं में लिखा गया साहित्य भी इसी का प्रमाण है। यह दबाव लोक भी अनुभव करता रहा है और समय-समय पर अभिव्यक्ति भी होती रही है। 1857 और 1947 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय की ललकार और पराधीनता की पीड़ा को लोकसाहित्य ने जो स्वर दिया वह सदैव अविस्मरणीय और प्रेरक रहेगा।

लोकभाषाओं के साहित्य में परस्पर आदान-प्रदान और ग्रहणशीलता है जिसके कारण ज्ञान का परस्पर मिश्रण होते-होते विस्तार होता रहता है। यह ज्ञान अगली पीढ़ियों को मिलता रहे इसके लिए बचपन से ही संस्कार देने की आवश्यकता है।

लोकसाहित्य में बालसाहित्य की भी अथाह संपदा है। लोरी और पालने के गीत हैं, खेल के गीत हैं, लोककथाएँ हैं, लोकनाट्य हैं, कहावतें पहेलियाँ हैं, उच्चारण शुद्ध करने के लिए वाक्यांश हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम बच्चों की आवश्यकताओं को समाज के संदर्भ में समझें। बालमन जिस तेजी से और गहराई से प्रभाव ग्रहण करता है यह सभी जानते हैं।

लोककथाओं को और पौराणिक प्राचीन कथाओं को समसामयिक संदर्भो और समस्याओं से जोड़ते हुए आकर्षक प्रस्तुति की जाय तो उसका प्रभाव गहरा पड़ेगा। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय कथा साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। पौराणिक कथानक, पंचतंत्र, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी आदि की कथाओं को मूल रूप में भी प्रस्तुत किया जाय और उनके लोक कथाओं में रूपान्तरित स्वरूपों में भी प्रस्तुत किया जाय जिससे यह स्पष्ट होगा कि समय की आवश्यकता के अनुसार और उन्हें अधिक लोकप्रिय तथा सहज बनाने के लिए लोक कथाओं के रूप में उनका जो स्वरूप गढ़ा गया है उसमें किस तरह से संदेष का भावग्रहण हो रहा है।

जहाँ तक लोकसाहित्य के संरक्षण का प्रश्न है यहाँ यह कहना आवश्यक है कि लोकसाहित्य अभिलेखागार में संरक्षित करने वाली निर्जीव वस्तु नहीं है। वह जीवन प्रवाह में बहती रहे, यह जरूरी है। हम अभिलेखागार और संग्रहालयों में संकलन कर लेने मात्र से संरक्षण का संतोष भले करना चाहें पर इसका सही अर्थो में संरक्षण तभी हो सकता है जब निरन्तर नयी पीढ़ियों को यह विरासत पुरानी पीढ़ियाँ सौंपती रहें और नयी पीढ़ियाँ उसकी अनिवार्यता और उसके महत्व को अनुभव करती रहें।

लोकसाहित्य सदियों से परम्परा में गंगा की भाँति प्रवाहित है। जिसमें निरन्तर समय के परिवर्तन के साथ आवश्यकतानुसार कुछ जुड़ता रहता है और जो अनावश्यक होता है वह छूटता जाता है क्योंकि संस्कृति सतत् प्रवाहित होती है। जो छूटता है वह भी धरोहर के रूप में सुरक्षित रहता है और जब इतिहास स्वयं को दुहराता है, तब उसकी प्रासंगिकता हो भी सकती है, किन्तु शाश्वत जीवन मूल्य परिवर्तित नहीं होते और उन्हें लोकगीतों की गंगा दूर-दूर तक पहुँचाती रहती है।

यह तो जीवन में प्रवाहित चेतना है जो हमें हमारी पहचान बताती है, जो हमें हमारे कर्त्तव्य की याद दिलाती है और हमारे भीतर के शिव को निरन्तर जगाती रहती है। इसलिए इन गीतों का संकलन, सर्वेक्षण और आज के युग के अनुरूप प्रासंगिक समीक्षाएँ अनिवार्य आवश्यकता हैं। यह संकलन से पूरा होगा। इस दिशा में अभी बहुत कार्य शेष हैं जिसे पूरा करने का दायित्व हम सभी का है।

लोकसाहित्य परम्परा की विरासत या धरोहर तो है किन्तु वह आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी ग्रहण करता रहता है। उसका यह परिवर्तन सामूहिक, जातीय संकल्प से होता है। लोकसाहित्य स्वीकृत मूल्यों की जाँच भी करता रहता है और समय की कसौटी पर कसकर परीक्षा भी लेता है। आवश्यकता पड़ने पर संकेत के रूप में समाधान भी देता है। लोकसाहित्य मनुष्य को सम्पूर्ण जीवन के आदान-प्रदान की सार्थकता देता है। वह संवाद की शैली में अपनी बात को सम्प्रेषित करता है। यह संवाद लोक कथाओं, लोकगीतों और लोक नाट्यों सभी में बराबर होता रहता है।

दैनन्दिन जीवन के घात-प्रतिघात, मोह-क्षोभ, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा-प्रेम सबके बीच में अपनी उपस्थिति से टूटने से बचाने और जोड़ने का कार्य भी लोक साहित्य बराबर करता रहा है।

आज जब परम्परा से प्राप्त ज्ञान और अनुभव को नकार कर तथाकथित नव्य चिन्तन की आंकाक्षा की जा रही है तब लोक साहित्य के सामने एक चुनौती है कि अपने बहुमूल्य अस्तित्व से समाज को सही दिषा दे सके। लोकसाहित्य का नये से विरोध नहीं है पर वह नया ऐसा होना चाहिए जो केवल नये के नाम पर नकल न हो, जो अपनी जमीन से अंकुरित नयी पौध सा हो जिसे यहाँ की मिट्टी और हवा-पानी स्वस्थ विकास दे सके। जो अपने परिवेश के प्रति सहृदय हो सके वही नव्य चिन्तन सड़ी-गली व्यवस्था को तोड़कर परिवर्तन का संकल्प दे सकता है। लोकसाहित्य समाज की पीड़ा का अनुभव करके उसकी चुभन से मुक्ति देने का संकल्प रखता है। अपनी ही नही सबकी पीड़ा समझकर सबके मन में संवेदना का ज्वार उठाता है। तभी वह सबके मन को छूता-भिगोता है।

लोकसाहित्य संस्कृति के संरक्षण का, उसके विकास और प्रवाह का संकल्प रखता है इसलिए उसे परम्परावादी साहित्य कहा जाता है। समकालीन को व्यतीत के विपरीत अर्थ में लिया जाता है और प्राय: लोग यह समझते हैं कि लोकसाहित्य में समकालीनता की खोज निरर्थक है किन्तु ऐसा है नही। समकालीनता और परम्परा में विरोध नहीं है बल्कि निरन्तरता की एक रेखा बराबर विद्यमान रहती है। समकालीनता को आधुनिकता का पर्याय माना जाता है। पर आधुनिकता का अंकुर व्यतीत से ही निकलता है और आज की आधुनिकता कल का भूतकाल बन जाती है। अपने समय के सुख-दु:ख के स्पन्दन की अभिव्यक्ति और अन्याय के प्रति विरोध का, क्रान्ति का स्वर समकालीनता की कसौटी है। लोकसाहित्य की यह विशेषता है कि इसमें जीवन मूल्यों के कुछ तत्व चिरन्तन होते हैं। साथ ही गतिशीलता भी बराबर बनी रहती है। परम्परा और इतिहास की यह निरन्तरता ही उसकी विशिष्ट पहचान है।

आज लोक साहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। गाँव शहर बन रहे हैं। शहरों में गाँव का प्रवेश जड़ों से कटकर हो रहा है। लोकसाहित्य की सहजता पर इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा है। चाहे लोकगीतों की धुनों को लें या फिल्मी धुनों के लोकगीतीकरण को हर हाल में यह सहज विधा प्रभावित हो रही है।

वैसे लोकसाहित्य तमाम चुनौतियों का उत्तर स्वयं तलाशता रहा है। विरोधों और संघर्षों के बीच अपनी राह बनाता हुआ अपने अस्तित्व की रक्षा स्वयं करता रहा है। वह सहनशील है किन्तु अन्याय के साथ समझौता नहीं करता। जब प्रवाह में अवरोध आता है, धारा रुकने लगती है तो विद्रोह करके नयी धारा भी प्रवाहित करता है। जो धारायें क्षीण हो रही हैं या मिट रही हैं उनसे अपनी धारा को जोड़कर उन्हें जीवन देता है।

इसलिए लोकसाहित्य के संक्षरण के लिए यंत्रों की सहायता से अधिक आवश्यक है कि उसको प्रयोजन से जोड़ते रहा जाय। लोक साहित्य का प्रयोजन जीवन का प्रयोजन है। प्रवाह के साथ ही गति के बारे में भी सोचते रहने की जरूरत है। ठहराव से सडांध उत्पन्न होती है। इसलिए ठहरना संस्कृति के लिए मंगलकारी नहीं है। इसे हमारी साँसों में, नित्य के व्यवहार में जोड़ना होगा। तभी जीवन में आ रहे बिखराव को रोका जा सकता है।

तमाम चुनौतियों के बावजूद आज भी लोकसाहित्य समाज की दिशाहीनता के समय में मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। आज जब राजमार्गों के चौराहे विद्युत प्रकाश की चकाचौंध से दिग्भ्रमित कर रहे हैं और वहाँ खड़ा मनुष्य समझ नहीं पाता कि किस मार्ग पर जायँ, उसे भागती भीड़ से मार्ग पूछने पर उत्तर नहीं मिलता तब उसे अपने गाँव की पगडण्डी याद आती है, गाँव की सँकरी गलियाँ याद आती हैं जहाँ एक-दूसरे को राह देते हुए निकला जाता था।

लोकसाहित्य या अन्य लोककलाएँ आदिम मानव की आवश्यकतानुसार की गयी अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत हुईं। आज भी मनुष्य का आदिम स्वरूप उसके भीतर विद्यमान है इस बात का प्रमाण लोककलाएँ देती हैं। लोकमन आज भी तमाम चालाकी भरे दुष्प्रचारों और स्वार्थ के नारों के बीच रहते हुए भी अपने उस सहज, सरल आवरण हीन आदिम मन को बचाये हुए है। इसीलिए अनास्था, बिखराव और टूटन भरे इस युग में भी अपनी अस्मिता की पहचान को बचाये रख सका है। इसके माध्यम से उस समूह मन को आज भी समझा जा सकता है जो अनेकानेक कण्ठों से, हाथों से और देह की विभिन्न भंगिमाओं से व्यक्त होकर सबके मन में राग बोध जगाने में संक्षम है।

कजरी गीतों के घराने और गायन

– अश्विनीकुमार आलोक –

कजरी के नामकरण के विषय में भारतेंदु हरिश्चंद्र का मत है कि मध्यप्रदेश के राजा दादू राय के निधन के पश्चात स्थानीय स्त्रियों ने उनकी स्मृति में जो करुण गीत गाये, 'कजरी' का वहीं से जन्म हुआ।

अंग्रेज़ी शासन काल में हिंदुस्तान से एग्रीमेंट मारीशस ?, रंगून और सूरीनाम भेजे जाने वाले गिरमिटिया मजदूरों की याद में भी अनेक कजरियां गायी गईं। उन दिनों रंगून भेजे जानेवाले मजदूरों के लिए मिर्जापुर को केंद्र बनाया गया था, वहीं मजदूरों को एकत्र किया जाता था और पानी के जहाज से ले जाया जाता था। बनारस की प्रसिद्ध कचौड़ी गली में रहने वाली एक स्त्री को अपने पति की बहुत याद आती थी। वह अपने पति को याद करती हुई जो गीत गाती थी,उसे कजरी कहा गया –

मिर्जापुर भइल गुलजार हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू
सेजिया पर लोटे काला नाग हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू
एहि मिर्जापुर से उड़ेला जहजिया
चली गइले सैंया रंगून हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू
पनवां से पातर भइल तोर तिरिया
दहिया गलेला जइसे नून हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू
हथवा में होत जो हमरे कटरिया
बहा देती गोरवन के खून हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू

बहादुर शाह जफर के लिखे हुए एक प्रसिद्ध झूला गीत को भी मानने वालों ने कजरी से अलग नहीं माना। 1981 में आयी प्रसिद्ध फिल्म 'उमराव जान' का यह गीत बहादुर शाह जफर की लिखी हुई वही कजरी है –

झूला किन्ने डारा रे अमरैया
अमवा के पेड़वा पे झूला झूलत हैं
गरवा लगाये पकड़ि लीन्हीं बैंया
रे अमरैया
डर मोहे लागे जिया मोर लरजे
हौले-हौले झूलना झुलाओ मोर सैंया
रे अमरैया

स्थिति यह है कि सावन को वर्ण्य बनाने वाले सभी लोकगीतों को कजरी कहा जाने लगा। अमीर खुसरो के लिखे हुए इस गीत को भी हम इस श्रेणी से अलग नहीं कर सकते –

अम्मा मेरे बाबा को भेजो री
कि सावन आया सावन आया

मिर्जापुर के प्रसिद्ध कवि बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की कजरी प्रसिद्ध है –

साचहू सरस सुहावन
गिरिवर विंध्याचल पे रामा
हरि हरि मिर्जापुर की कजरी
लागे प्यारी ए रामा

मिर्जापुर और बनारस में कजरी के दंगलों की जो परंपरा रही, उसने अनेक लोककवियों को जन्म दिया। ऐसे ही एक लोककवि भैरो ने जब एक दंगल में सवाल छोड़ा –

मन बना पपीहा बोल रहा
तन पिंजरे में बसके रे
कभी तो रोये जार जार
कभी बोले हंसके रे

कहा जाता है कि प्रतिद्वंद्वी लोकगायक खुदाबख़्श ने भैरो को अनुकूल जवाब दिया –

बच रहो पपीहे फंदे से
नहिं जैहों जाल में फंसके रे
तन पिंजरा के अंदर पिंजरा
बिछा काल ने कसके रे
चार बरन से बना है यह तन
तन पिंजरा कहलाये ये
जाल बिछा कर बैठा जालिम
जिस दम मौका पाये रे
फना का फंदा फेंके जिस पर
क्या मजाल बच पाये रे
लगा के लासा जिसको फांसा
कर डाला बेबस के रे

खुदाबख़्श ने अपने इसी गीत में भैरो के लिए चुनौती भरा यह प्रश्न भी उछाल दिया –

कौन रंग या पंछी का है
जो तन पिंजरा के अंदर
हाथ पैर बतलाओ उसके
कौन किसिम उसका सर

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तरह ही कजरी गायन के लिए अनेक घराने प्रसिद्ध हुए हैं, उन घरानों ने अनेक प्रकार की कजरियां गायी हैं। जैसे चौलरिया, निर्गुनिया,ककहरा,ढुनमुनिया, शायरी आदि।

कजरी गानवाले लोकगायकों के वंशजों और शिष्यों ने लंबे समय तक उन घरानों की शैलियों को जीवित रखा। मिर्जापुर के कजरी गायक वफ़्फ़त का नाम भुलाये नहीं भूलता। वफ्फत पर कबीर का प्रभाव था। उन्होंने कबीर की तरह ही पाखंड और आडंबर के विरोध में कजरियां लिखीं और गायीं। उन्होंने अपनी रचनाओं में हिंदू और मुसलमान को एक ही बताकर एक साथ सद्भाव पूर्वक जीने का संदेश दिया।

अम्बर बेल उदियापुर छाई रे

– गोपाल वर्मा –

इतिहास जानने के कई स्रोत हैं- शिलालेख, खुदाई से प्राप्त अवशेष, तत्कालीन शासकों के रोजनामचे, तत्कालीन नाटक और बहुत कुछ लेकिन लोकसंस्कृति का इतिहास जानने के प्रमुख स्रोत हैं कहावतें, लोककथाएँ, गाथाएँ, ख्याल, तमाशे और लोकगीत जो न नष्ट किये जा सकते हैं और न खो सकते हैं क्योंकि जब तक लोकसंस्कृति जीवित है ये विधाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक या जबानी रूप से हस्तांतरित होती आ रही हैं। यही कारण है कि सभी ओर इनके संरक्षण की दिशा में उचित कदम उठाये जा रहे हैं। लोकगीतों ने लोकसांस्कृतिक इतिहास के अन्वेषण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लोकगीत लोकसंस्कृति के इतिहास का अकाट्य प्रमाण हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो संझ्या के गीत 'संझ्याबाई को सासरो गढ़ अजमेर परण पधार्‌या सांगानेर' से सांझी का मूल राजस्थान प्रकाश में नहीं आता और न ही उसकी और खोज-खबर ही मिलती।

चारों ओर झीलों और गिरि-श्रृंखलानों से आच्छादित उदयपुर नगर प्राचीनकाल से ही मेवाड़ की सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। राजस्थान के सुरंगे पर्व गणगौर की उदयपुर की सवारी सर्वप्रसिद्ध रही है ।

'गणगौर' उदयपुर के राजवंश की कोई राजकुमारी भी रही है। गणगौर के साथ पिछोले की पाल के घूमर गीत भी जगप्रसिद्ध हैं। महाराणा सज्जनसिंह ने अपने समय में गणगौर के दिन नाव की सवारी प्रारम्भ की थी। इस सम्बन्ध में एक गीत अब भी सुनने को मिलता है जो घूमर के गीतों में गाया जाता है-

हेली नाव री असवारी सजन राण आवे छे,
सजन राण आवे छे हिंदुवां भाण आवे छे।
धीरे धीरे नाव चले इन्द्र आवे छे,
पिछोला री पाळ गोरी घूमर गावे छे।।

उदयपुर के महाराणा को प्रात: 4 बजे जगाते समय जो गीत गाये जाते हैं, उनमें उदयपुर का नाम सुनने को मिलता है-

रसियो राणेराव मेवाड़ो रसियो राणेराव,
ओ म्हारो बसियो हीवड़ा बीच मेवाड़ो रसियो राणेराव।
जैपर, जैसलमेर मेवाड़ो बादळ बीकानेर,
ओई तो सारा ही केसरिया छाजै छे नामी उदियानेर।।

जिस प्रकार उदयपुर पर्यटन केन्द्र तथा लकड़ी के खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार पहले यह पोमचों, चूंदड़ियों के लिये सुविख्यात था। सुहागिनें एक तरफ 'छैल भंवरजी मने मंगा दो उदियापुर को पोमचो' कहकर उदयपुर के पोमचे के लिए उत्कण्ठित रहती हैं तो दूसरी ओर यहां की साड़ी मंगाने के लिए वे अपने छैल भँवर (प्रियतम) से उदयपुर की साड़ी के लिए भी लालायित हो उठती हैं-

'म्हांने साड़ी मंगा दो उदेपुर की।'

उदयपुर के पीलिये की प्रसिद्धि का श्रेय तो उसके रंगरेज को जाता है—

एक पिया ओ म्हांने पील्या री हूंस,
पीलियो वेगो मंगावाजो।
एक पोत ओ पाटण रो मंगवो,
नानी-सी बंदण बंदावजो।
एक रंगरेज उदेपुर रो तेवाड़ो,
कोर अजमेर री देवाड़जो ।।

अन्य शहरों की हाट की तरह उदयपुर की हाट भी कभी नामीधामी थी जहाँ आसपास के आदिवासी अपने दैनिक जीवन की आवश्यक चीजें खरीदते थे। विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले एक गीत में इसका प्रसंग उल्लेखनीय है-

उदेपर रो सेर मेरो सायबो अजू नीं आयो ।
मेरो सायबो हाटां ने बाजारां तागली वारवा लागो।।

मेले-ठेले, हाट-बाजारों में धन-धान्य की विपुलता होती ही है। इसी से तो बणजारी ने कहा है कि इस विपुलता के कारण ही कई कबूतर (मन्छेले) उदयपुर आते-जाते हैं—

चम-चम चमके चूंदड़ी बणजारा रे
कांई थोड़ो तो म्हारे सामूं नाळ रे बणजारा रे।
उदेपुर सरीखा सेर में बणजारा रे
कांई शेष कबूतर जाये रे बणजारा रे।।

भला इस होड़ में उदयपुर का तेली क्योंकर पीछे रहता! विवाह के अवसर पर पीठी करते समय हल्दी गीत में उसे अवश्यमेव स्मरण किया जाता है-

सुण सुण रे उदियापुर रा तेली
थारी घाणी में केसर कस्तूरी।
माय डालूं जायफल ने जावंतरी
यो तेल लाड़ा रे अंग चढ़सी।।

उदयपुर को रूपायित करता हुआ यह चंग गीत भी इधर काफी प्रचलित है-

ढोला ढोल मजीरा बाजे रे
काळी छींट को घाघरो नजारा मारे रे।
उदियापुर रे चोवटे पड़्यो पेमली बोर
नीची होकर लेवण लागी पड़्यो कमर में जोर ।

और तो और कुंवारी बालाएं झूलना भी उदयपुर में ही पसंद करती हैं

अंबर बेल उदियापुर छाई रे,
जहां मेरी लाड़ो प्यारी झूलन आई रे।

उदयपुर का वास (निवास) और पिछोले का पानी न जाने कितनों को अपनी ओर आकर्षित करता है! इस आकर्षण के पीछे सोने-चांदी की फरमाइश भी कोई महत्व नहीं रखती। गौरी अपने प्रियतम से और कुछ न चाह कर केवल उदयपुर का वास चाहती है-

कईयन मांगू म्हारा अंदाता कईयन मांगू सा।
राखो नी गोरी रो मान म्हारा अंदाता कईयन मांगू सा॥
सोनो नी मांगूं रूपो नी मांगूं तांबो तीन तलाक।
पिछोला रो पाणी मांगूं उदियापुर रो वास।।
म्हारे मोड़ा वेगा आजो रे जामण रा जाया।
म्हें तो थारो कई न मांगा,
चूड़ला रे साठे म्हें तो उदियापुर मांगा॥

राणाजी का यह देश कितना सुन्दर है जहां ऊंचे-ऊंचे महल-झरोखे और उनके नीचे पिछोला की पाल थबोले खाती अपनी प्राकृतिक सुषमा, सौंदर्यश्री विकीर्ण कर रही है-

ऊंचा राणाजी थांरा गोखडा रे लोल।
नीचे पिछोला री पाळ व्हाला जी।।
अठीने उदियारणो वठीने जोधाणो
बीच में देसूरी री नाळ व्हाला जी ॥
व्हालो लागे राणाजी हो देसड़ो रे लोल।।

गौरी की नादान बिछिया भी इसी पिछोला की पाल पर पाँवों को रगड़-रगड़ कर धोते समय खो गया है-

रगड़ रगड़ पग धोवती ओ रसिया
धोवती पिछोला री पाळ मारुड़ा जी
म्हारो गम गयो नादान बिछीयो।

पिछोला की यह पाल पतंग उड़ाने की भी सबसे सुन्दर और उपयुक्त जगह है-

आप तो पतंग उड़ावा जाजो सा पिछोला री पाल।

पिछोला का पानी भी अन्य बावड़ियों के खारे पानी को मात करता हुआ अमृत सा स्वाद देता है। एक नृत्यगीत में सुनिये -

भर लावो रे पाणी सागर रो।।
राणाजी री बावड़ी रो खारो-खारो पाणी,
हाँ रे म्हारे पिछोला रो पाणी अमरत वाणी रे।।

यही नहीं, दीवाली के दूसरे दिन गाये जाने वाले हीड़-गीत में भी पिछोला अवतरित हुआ है—

हाथी पड़्यो-पड़्यो मूते रे पिछोला भराय,
धोबी कपड़ा धोवा आवे रे मंगर खेंच ले जाय।
सल्ला सायजादीं लोड़ी॥

जहाँ गोरियाँ-कोमलांगियाँ अपने को उदयपुर से साँठगाँठना चाहती हैं वहाँ वे अपने प्रियतम को उदयपुर जाने से रोकती हैं और कहती हैं कि वहाँ की कामिनियाँ तुम्हें बिलमा कर रखलेंगी-

म्हें थाने बरजूं सायबा थें उदियापुर मत जाय।
उदियापुर री कामणी थांने रखलेला बिलमाय।।

स्मृतियों के शिखर (191) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नवरात्रा में शक्ति और भक्ति का दरसाव

नवरात्रा में शक्तियों का अवतरण होता है। रात-रातभर जागरण होता है। अपने सेवकों में उनका भाव आकर प्रत्यक्षीकरण होता है। उनकी छाया बनी की बनी रहती है। देवताओं की विशिष्ट सेवा-पूजा, मान-मनावण, धूप-ध्यान, भोग-पाती, अरजू-आरजू, जातरियों का आवागमन लोकदेवी-देवताओं के देवरों में बना का बना रहता है। नवरात्रा वर्ष में दो बार आती है। शारदीय नवरात्रा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से तथा वासंतिक नवरात्रा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ होती है। इनमें शारदीय नवरात्रा अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। नवरात्रा के नौ ही दिनों देवरे में अखंड दीपक जलता है। भोपा देवरे में ही रहता, सोता तथा पूर्ण संयमी जीवन जीता है। नवरात्रा में भारत गाथाएं गाई जाती है। भारत का एक नाम 'वीर' भी है। इन्हें कहीं-कहीं 'माताजी के गीत' भी कहते हैं।

हमारा देश जितना धार्मिक-आध्यात्मिक है संभवत: विश्व में उतना कोई देश नहीं। छोटे-मोटे हर धर्म, कर्म, पूजा, प्रतिष्ठान, संस्कार पर हमारे यहां लोकदेवी-देवताओं का आह्वान, उनकी मनौती, जागरण, गाथा-गायकी, भजनभाव, अनुष्ठानादि का विधान है। अलग-अलग संस्कारों, अनुष्ठानों, व्रतों, कथाओं के अलग-अलग देवता, उनके विशिष्ट भोपे, पूजापा, मान-मनावण। मनुष्य की बीमारियों तक के अलग-अलग देवरे। मनुष्य के साथी पशुओं की व्याधियों के भी जुदा-जुदा देव, उपचार, उत्सर्ग, प्रसंग। ये सारे उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि मनुष्य अपने से परे किसी ऐसी विशिष्ट शक्ति का पुजारी है जो संसार की रचना-प्रक्रिया में सर्वोपरि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

नवरात्रा का हमारे यहां शास्त्रोक्त विधान तो है ही पर लोकविधान भी बड़ा जोर-जबर्दस्त है। कई प्रकार की सिद्धियां, टोटके, तंत्रमंत्र इन दिनों किये जाते हैं। शक्तियों का अवतरण होता है। रात-रातभर जागरण होता है। अपने सेवकों में उनका भाव आकर प्रत्यक्षीकरण होता है। उनकी छाया बनी की बनी रहती है। देवताओं की विशिष्ट सेवा-पूजा, मान-मनावण, धूप-ध्यान, भोग-पाती, अरजू-आरजू, जातरियों का आवागमन लोकदेवी-देवताओं के देवरों में बना का बना रहता है।

नौ लाख देवियों का आश्रय स्थल :

शक्ति प्रतीक रूप में हमारे यहां लोकदेवियों की पूजा का विशेष जोर रहा है। किसी महिला ने कोई विशिष्ट असाधारण चमत्कारपूर्ण कार्य दिखाया कि उसे लोकजीवन ने शक्ति-देवी का अवतार मानकर पूजना प्रारंभ कर दिया। उसके नाम के देवल, मंदिर, देवरे स्थापित कर दिये गये। ऐसी देवियों की संख्या कई हैं। उनके अलग-अलग शक्ति-शौर्य के किस्से एवं घटना-प्रसंग सुनने को मिलते हैं।

अकेला नौ लाख देवियों का स्थान 'बड़ल्या हींदवा' उदयपुर के निकट खमनौर के पास स्थित है। बारह बीघे में फैले इस वट वृक्ष पर नौ लाख देवियां झूला झूलती, क्रीड़ा-किल्लौल करती हैं। मैंने स्वयं जाकर इस स्थान को, बड़ को और वहां के आसपास के पहाड़ी इलाके को देखा है। बड़ल्या-हींदवा संबंधी भारत-गाथा भी है जिसमें यहां के आसपास के स्थानों का बड़ा उन्नत वर्णन मिलता है। यह वर्णन इतिहास-सम्मत भी है। इसमें देवियों की केलि-क्रीड़ा का बड़ा सुंदर चित्रण है।

राजस्थान में पांचवीं शताब्दी के बाद कई शिलालेख मिलते हैं जिनमें शक्ति-देवियों के मंदिर-निर्माण का पता चलता है। डूंगला की एलवा, निकुंभ की आवरी, पूठोली की लालांफूलां, वल्लभनगर की ऊंठाला, रींछेड़ की आमज, चित्तौड़ की कालका, एकलिंगजी की नारसिंघी, उदयपुर की अम्बा, खमनौर की देवलउनवा, कांकरोली की धुंधलाज, राजनगर की बोराज, देवगढ़ की सानु, लाखोड़ा की भरक, करौली की केला, खुड़द की इन्द्रबाई, बीकानेर की नागणेचिया, वागड़ के भैंकरेड़ की विजवा, कटारा की हेरण, तालवाड़ा की तकताई, मेलड़ी, खोड़ियार, देलवाड़ा की राटासण, राईड़ा, केलवा की गवालां, घोसुंडा की जांतला, आसींद की धनोप, खारकन्दा की गोदाला, बसी की टुकड़ा, जावद की कुकड़ेसर, पारसोली की घाटा, बेगू की जोगणिया, देवाली की बीज, भीलवाड़ा की रोड़ज, झूंझनू की मंछा, कुरज की गोगाथला, कांकरोली की भरत आदि देवियों के अतिरिक्त दीयाड़ी, गणगौर, चौथ, दशा, संतोषी, फूली, पथवारी, डाली, हूला, अनफूल, सगरा, रोगा, गोरज्या, हिंगलाज, रूपण, सूर, सीता, बाण, पीपलाज, खलखल्या, गुवाड़, नागणी, गुण्या, मच्छी, मुरगा, बोकड्या, मोगी, स्यावड़, फलका, गलफेड़ी, पसानी, मासी मां, शीतला, छठी, केवल, छींक, लूरकी, तुलसी, लटकाली, कमस्या, वगोतरी जैसी कई देवियां हैं जो लोकजीवन में अपने नाना चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हैं।

कालिका माता, ईडाणा माता, बायण माता, आवरी माता, सुंधा माता, भादवा माता, आशापुरा माता, भंवर माता, हरसिद्धि माता, विजवा माता, अम्बा माता, झांतला माता, जोगणिया माता, एलवा माता, नागणेची माता।

- फोटो : राजेन्द्र पालीवाल

देवियों का वैशिष्ट्य :

इन देवियों में ऊंठाला चेचक की, एलवा तुतलों की, लूरकी खांसी की, शीतला, मसानी विशेष प्रकार के चेचक की, गलफेड़ी गलफेड़ों की, बिजवा लूले-लंगड़ों की, आवरी लकवे रोगियों की, बाकियारी गले की गांठों की, झांतला लूलेपांगों की, गणगौर सुहाग की, दीयाड़ी, केला संतान की, दशा ऋद्धि-सिद्धि की देवी मानी जाती है। संतान देने वाली देवियों के पालना चढ़ाया जाता है। लूरकी के ठंडा भोजन चावल-दही व बीमार बच्चे का फटा पुराना कपड़ा, गणगौर, दशा के मेंहदी-लच्छा तथा हल्दी मिश्रित आटे के विविध आभूषण चढ़ाये जाते हैं। स्यावड़ कृषि की रक्षा करती है। इन देवियों के नारियल भी चढ़ाया जाता है। दीयाड़ी के चावल-लपसी, चौथ के चूरमा-लड्डू, शीतला के ओल्या-ढोकला चढ़ाने की परंपरा है।

लोकदेवियों के साथ-साथ लोकदेवताओं के भी हमें कई नाम मिलते हैं। इनके भी अलग-अलग कार्य तथा सिद्धियां हैं। इन देवों में रामदेवजी (अंधापन व कोढ़), मोती महाराज (मोतीझरा), कालाजी, गोराजी, छप्पनजी, डाडा, रांगड्या, आलेड़ा, जोइड़ा, भमरास्या, तेजा, ईंटा, मामादेव, नीमा, नार, पोल्या, शनि, भोमिया, घास, राड़ा, दीयाड़ा, हरदेव, खेड़ादेव, जालिंग, बालाजी, गूना, मेनू नामक देवों की बड़ी धाम चलती है।

भेरू के कई रूप हैं। 52 भेरू, 8 पीर तथा 64 जोगण्यां तो हैं ही। काला गोरा के अतिरिक्त भेरू के अन्य रूपों में खेतरपाल, धरमराज, ताखाराज, कराड्यो भेरू, आगल्यो भेरू, कचेमरयो भेरू, मांडव्यो, मसाण्यो, रगत्यो भेरू, घाटा रो भेरू, वचलावासा रो भेरू, बनाक्या भेरू, गंगा भेरू, भदेर्या भेरू, खेजड़ी रा भेरू ,दूत्या रींगण्या भेरू, गोबर्या भेरू जैसे नाम बहुत प्रचलन में हैं। इनमें बालाजी के तेल चुपड़ा मोटा रोट-गुड़, तेजाजी, देवनारायण के कच्चा दूध, सवाईभोज के शराब, गोरधनजी के लपसी-पूड़ी, काला के केसर अफीम तथा कइयों को बलि दी जाती है।

मनुष्यों को व्याधियों से मुक्त करने वाले इन देव-देवियों में ऐसे भी देव हैं जो मानव-साथी पशुओं की भी हर बीमारी मेटते हैं। उदयपुर के पास मंगलवाड़ के चौराहे के राड़ाजी का खेड़ा गांव के देवरे में तो बांझ पशु तक का बांझपन दूर किया जाता है। यहां दूध-दही का जावणियां चढ़ाई जाती हैं। इससे लगता है कि जहां लोकजीवन में बांझ औरतों को अच्छी भावना से नहीं देखा गया है वहां बांझ पशुओं को भी तिरस्कार ही मिला है।

जिस लड़की को कोई न विवाहे, उसका विवाह खेतरपाल से कर दिया जाता है ताकि वह अपने अगले जन्म में कुंवारी न रहे। डूंगरपुर के पास मांडव गांव के मांडव्ये हनुमान के वहां ल्होड़ी दीवाली को मेला भरता है। इस दिन हनुमान का भोपा अपनी एक अंगुली से सवा पांच मन की सांकल उठाता है।

इन देवी-देवताओं के अतिरिक्त एक देव और होते हैं जो 'पूरवज' कहलाते हैं। ये घर के ही किसी प्राणी की मृत्यु होने पर प्रकट होते हैं। वागड़ की ओर पुरूष-पूरवज को 'पूरवोज' तथा स्त्री-पूरवज को 'नांगरेसि' कहते हैं।

आदिवासियों में पुरूष-पूरवज को 'सीरा' जबकि महिला-पूरवज को 'मातलोक' कहते हैं। ये गृह देव भूत-प्रेत, डायन-चूड़ैल तथा अन्यान्य संकटों से घर-परिवार की रक्षा करते हैं। इनकी मृत्यु-तिथि पर धूप-ध्यान तथा पूजा का विधान है। पुत्र-जन्म तथा विवाह पर इन्हें रात्रि जागरण दिया जाता है। श्राद्धपक्ष में मृत्यु तिथि पर छोटे-बड़े प्रत्येक पूरवज को मिष्ठान्न-धूप दी जाती है। यह धूप कितनी पीढ़ी तक लगती है, इस बारे में मैं अनेक वर्षों से अनेक लोगों से पूछताछ करता रहा। अंत में तीजादेवी यादव ने बताया कि चार पीढ़ी तक के पड़दादा-दादी पूर्वजों को धूप लगती है। मैं समझ गया कि सोने की सीढ़ी चढ़ने वाला भी पड़दादा ही होता है।

प्राय: सभी लोकदेवी-देवता तथा पूरवज किसी के शरीर में प्रकट होकर सवाल-जवाब करते हैं। पूछी हुई बात का उत्तर देते हैं। रोग, शोक, दुख, चिंता तथा हर प्रकार की शंका का निवारण करते हैं। किसी के शरीर में देवता के वास वाले व्यक्ति को 'भोपा' कहते हैं परन्तु घर के पूरवज घर के ही किसी महिला-पुरूष के शरीर में भाव-रूप में आते हैं। वे उनके 'घोड़ले' होते हैं। देवी-देवताओं के भोपे पुरूष होते हैं।

कहीं-कहीं लालांफूलां के भोपे को मैंने भाव लाते समय औरत वेश में देखा। इन देवी-देवताओं के स्थान-देवरे पर साप्ताहिक चौकी लगती है जहां आकर व्यक्ति समस्याओं का समाधान पाता है और मनोरथ पूरा करने की साध लेता है। मनौती बोलता है। भेंट-भेंटावण चढ़ाता है। ये देवी-देवता जात-पांत के बंधनों से मुक्त होते हैं परन्तु चूंकि इनके देवरे प्राय: प्रत्येक गांव में होते हैं अत: ये ग्राम देवता के रूप में अपने गांव, जाति तक विशेष रूप से सीमित भी होते हैं।

नवरात्रा में विशेष मानता :

शक्ति और शौर्य के प्रतीक इन देवी-देवताओं की नवरात्रा में नौ ही दिन विशेष सेवा-पूजा होती है। यह नवरात्रा वर्ष में दो बार आती है। शारदीय नवरात्रा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से तथा वासंतिक नवरात्रा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ होती है। इनमें शारदीय नवरात्रा अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। नवरात्रा के नौ ही दिनों देवरे में अखंड दीपक जलता है। भोपा इन दिनों देवरे में ही रहता, सोता तथा पूर्ण संयमी जीवन जीता है। इन दिनों अधिकाधिक समय भोपे में देव का वास बना रहता है। भक्तगण भजन, गीत, गाथाएं गाते रहते हैं। सेवा-पूजा धूप-बत्ती चलती रहती है। कई मनौतियां वाले भी और अन्य बीमार व्यक्ति भी खासतौर से इन्हीं दिनों अधिक दर्शनार्थ आते हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 अक्टूबर 2024

सम्पादकीय

गवरी इन दिनों

भील-गमेतियों के धार्मिक अनुष्ठान के रूप में गवरी का प्रदर्शन न जाने कबसे शिव-पार्वती तथा देवी गवरां, गौरज्या की आराधना का दर्शनीय परिदृश्य बना हुआ है। रक्षाबंधन के ठीक दूसरे दिन ठण्डी राखी से होकर 40 दिन का यह अनुष्ठान उदयपुर के गिरवा मण्डल के गांव-गांव दर्शकों का खासा अनुरंजन करता धर्म एवं अध्यात्म की गंगा प्रवाहित करता है।

माता गौरज्या की पाती के रूप में स्वीकृति मिलने पर पूरे गांव में हर्ष की लहर छा जाती है और गवरी की तैयारी शुरू हो जाती है। गवरी के मुख्य पात्रों में शिव के रूप में बुड़िया तथा शिव-पत्नियां शक्ति-पार्वती के रूप में दो राइयां, मादल बजाने वाला मादलिया तथा थाली बजाने वाले थालीसर की थाप और टंकार से सारा वातावरण गूंजने लगता है। नौ मुख्य पात्र मांझी और शेष आठ से अस्सी वर्ष तक के अभिनेता घर से निकलने के बाद निश्चित अवधि बाद ही समारोहपूर्वक अपने घर में प्रवेश करते हैं।

गवरी खेल प्रारम्भ में कभी नृत्य प्रधान रहा है। कारण कि बाद में धीरे-धीरे इसमें जुड़ते गये प्रहसन-दृश्य के आने और समाप्ति पर विदा होने पर नृत्य की जो घाई चलती है उसमें सभी अभिनेताओं की भागीदारी यही संकेत करती है। करीब 30-40 स्वांग एक-के-बाद-एक दिन भर जहां भी बीच राह खुले स्थान पर आते-जाते राहगीरों को गवरी देखने को मिल जाती है।

गवरी के सभी पात्रों का अभिनय पुरुष ही करते हैं। अन्तिम दो दिन घळावण तथा वळावण के होते हैं। इसमें अन्य गवरी दल भी शरीक होते हैं तब आसपास की आठ-दस गवरियां तथा गांवों के लोग सम्मिलित होकर एक अजीब समां बांध देते हैं।

अब गवरी को उस गांव की भील बहिन-बेटियां ही अपने गांव आमंत्रित नहीं करतीं, उस गांव के अन्य भी आमंत्रित कर धन्य होते हैं। गवरी अब पूरे भारतीय रंगमंच का नाट्य प्रदर्शन नहीं है अपितु विश्व परिदृश्य में भी इसकी धूम प्रारम्भ हो गई है। अन्य ऐसा कोई नाट्य रूप प्रचलन में नहीं देखा गया है।

सरवण पुत्री धन्याबाई नहीं रहीं

उदयपुर (ह. सं.)। उमरावबाई पत्नी रोशनलालजी बाबेल का 21 सितम्बर को निधन हो गया। वे धन्याबाई के नाम से ही अधिक जानी गई। डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि भाणजी धन्याबाई नाम हमारे घर का दिया हुआ था। वे करीब 80 वर्ष के आसपास थीं।

डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि धन्याबाईजी जैसी सरवण पुत्री अब उदाहरण बन कर रह गई हैं। उनकी माता की यही एकमात्र संतान थीं। उन्होंने अपनी माता को कानोड़ से लाकर अपने पास रखा और अन्तिम समय तक जो सेवा की उसकी चर्चा लम्बे समय तक होती रहेगी।

धन्याबाईजी बड़ी धार्मिक एवं दानशील प्रकृति की महिला थीं। असहाय बच्चों की संस्थाओं को वह खाद्य पदार्थ पहुंचाने में सदैव आगे रहतीं और कभी इसका प्रचार नहीं किया। अपनी मां के गामड़े के लोगों से लगातार सम्पर्क बनाये रख सभी 60 परिवारों में एक-एक साड़ी तथा अन्य वस्तुएं भेंटकर वे सदा सुख का अनुभव करतीं। गामड़े अरनिया की महिलाएं भी उनसे मिलते आती रहतीं। अपने ससुराल बड़ीसादड़ी पंचायती नोहरे में भी उन्होंने अपने पति के नाम एक कक्ष का निर्माण कराया। अन्य धार्मिक स्थलों पर भी वे सहयोग करने में पीछे नहीं रहीं।

जैसी सेवा उन्होंने अपनी माता सोहनबाई की की वैसी ही सेवा धन्याबाई की उनके सेवा-पुत्र आशीष गांधी ने की। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

पत्रपिटारी

परमादरणीय लोकसंस्कृति-रत्न
डॉ. महेन्द्रजी भानावत
सादर जय जिनेन्द्र!

एक बार आपको बताया था कि 'शब्द रंजन' के अंक मैं आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज के विद्वान शिष्य, श्रमणसंघीय संत श्री ज्ञानमुनिजी को भी भिजवाता हूँ। इस समय वे हैदराबाद में चातुमासार्थ विराजित हैं। शब्द रंजन के पिछले किसी अंक में श्री श्याम मनोहर व्यास की पुस्तक 'दुनिया जैसी मैंने देखी' की समीक्षा छपी थी। वह पुस्तक श्री ज्ञान मुनि जी पढ़ना चाहते हैं। आप यदि डॉ. तुक्तक भाई साहब को कहकर भिजवा सकें तो हम प्रेषण व्यय सहित पुस्तक का मूल्य चुका देंगे।

स्थविर श्री ज्ञानमुनिजी शब्द रंजन में आपके स्मृतियों के शिखर एवं अन्य लेख भी रुचि से पढ़ते हैं। उन्होंने प्रमोदभाव से आशीर्वचन दिया कि इस उम्र में भी आप साहित्य की प्रेरणादायक सेवा कर रहे हैं। जब उन्होंने आपके आचार्यश्री हस्तीमलजी जुड़े संस्मरण के बारे में पूछा तो मैंने उन्हें 'जैन लोक का पारदर्शी मन' पुस्तक भिजवाई। इस पुस्तक में आचार्यश्री हस्ती पर भी आपका एक अच्छा लेख हैं।

आपका शुभाशीष मुझे कई रूपों में मिलता है। एक रूप 'शब्द रंजन' के सितंबर-2024 (द्वितीय) के अंक में देखने को मिला। इसमें आपने मेरे संस्मरण को 'अतिथि संपादकीय' के रूप में प्रकाशित करके शुभाशीष प्रदान किया है। इसके लिए आपका एवं 'शब्द रंजन' परिवार का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

आपका स्वास्थ्य सदा अच्छा रहे। स्नेहाशीष और मार्गदर्शन मिलता रहे। 'शब्द रंजन' की संपादक एवं बंधुवर डॉ. तुक्तकजी सहित परिवार में सबको सादर जय जिनेन्द्र!

- डॉ. दिलीप धींग

अपना देश अपनी संस्कृति

हस्तलिखित ख्याल पुस्तकें

मेलोंठेलों तथा ठेलों पर बिकने वाली ख्याल-तमाशा पुस्तिकाओं के अलावा हाथ से लिखी गई ख्याल पुस्तकें भी बड़ी संख्या में लोगों के पास मिलती हैं।

हाथ के बने मोटे कागज पर काली स्याही से सुन्दर लिखावट में ऐसी पुस्तकें भी ख्यालप्रेमियों के वहां देखने को मिली जिनमें प्रत्येक पृष्ठ का हाशिया अलग रंग में छूटा हुआ है। अक्षर बहुत सुन्दर, सुवाच्य तथा कलम से लिखे मोटे होने से बूढ़ी आंखें भी सहजता से पढ़ने में सक्षम होती हैं। किन्हीं गुटकों में टेरों छंदों तथा पात्रों के नाम अलग स्याही में मिलते हैं।

ऐसे गुटके भी मिले जो सचित्र हैं। रेखाओं के माध्यम से पात्रों की शक्ल-सूरत, पहनावा, संवादमूलक हावभाव तथा मंचीय परिवेश तक बड़ी खूबी से चित्रित किया मिलता है। कुछेक गुटकों में रंगीन चित्रों का दरसाव भी चित्ताकर्षक लगा।

ख्यालों का एक गुटका मुनि कांतिसागर के पास था जो तब उदयपुर, भूपालपुरा में रहते थे। यह गुटका 5.6 इंच लम्बा तथा 4.2 इंच चौड़ा। इसमें दोनों ओर 6-6 सेमी. का लाल स्याही से हाशिया छुड़ा हुआ। इसके प्रत्येक पन्ने पर 10 से 15 तक पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में 16 से 39 तक अक्षर लिखे। अक्षर सुन्दर तथा सुवाच्य। कागज मोटा तथा काली स्याही में लिखा गया। ख्याल का नाम, छन्द संख्या तथा टेरें आदि लाल स्याही में लिखी हुई। इसमें कुल 29 ख्याल संग्रहीत थे।

(1) कंदोई का ख्याल (2) बड़ला रो ख्याल (3) मुसाफर रो तमासो (4) गांदी रो ख्याल (5) ढोला रो ख्याल (6) चितारा रो ख्याल (7) लिछमी गुंसाई रो ख्याल (8) वेद रो तमासो (9) कंवर हमीर रो रतना रो तमासो (10) बिजा सोरठ रो तमासो (11) चंपा गुलाब रो ख्याल (12) ख्याल (13) तमासो छोरा रो (14) हीर रंजा रो ख्याल (15) मुलतानी पठान रो तमासो (16) पदम कुंवर रो ख्याल (17) छेल बटाउ मोना राणी रो ख्याल (18) फूलां दे पठान रो ख्याल (19) बेकार रो ख्याल (20) सूतवाल रो बगड़ी रा वासी रो ख्याल (21) तोडरमल रो ख्याल (22) सेठ दोय गोरियां रो ख्याल (23) रंजा हीर रो तमासो (24) फूलजी रो ख्याल (25) सेलीवाला रो ख्याल (26) बजाज रो ख्याल (27) देवर भोजाई रो ख्याल (28) लेला मिजनूं रो ख्याल (29) छोटा कंथरी नार रो ख्याल।

गुटका जीर्ण-शीर्ण हालत में था। इसमें प्रारंभ के 18 पन्ने नहीं थे। बीच के कुछ पन्ने त्रुटित, कुछ फटे हुए तथा कुछ अप्राप्य थे। अंत के भी करीब 40-50 पन्ने गायब थे। बरसात के पानी तथा सील की वजह से जगह-जगह अक्षर बिगड़े हुए थे। अधिकतर ख्यालों में अश्लील शब्दों की भरमार थी पर चित्रों में कहीं भी इस प्रकार की अश्लीलता तथा विकृति नहीं देखी गई।

यह गुटका आसोप निवासी महात्मा तिलोकचंद का लिखा हुआ था जो स्वयं इन ख्यालों के रचनाकार भी थे। इस बात की पुष्टि ख्यालों के अंत में देखी गई। यथा-

(1) कोट अगाड़ी घूंम रया छा देख नर हर नारी : तिलोकचंद तो खेल बणायो सुंणे दुनियां सारी : दुहा धाल्या सांतरास कांई टेरां धरी मजारी।।11।। तिलोकचंद तो खेल बणायो सबके आयो दाय : जे कोई मेरी वदी करे सो जड़ां मूल से जाय।।12।। संवत् 1891 सुद असाड़ री तीज : खेल बणायो खूब मजारो नवी चलाई चिजे।।12।। संपूर्ण लिखी लाल तिलोकचंद 1891 रा मिति सावण वद 10।। (छेल बटाउ मोना राणी रो ख्याल)

(2) इति वगरी रा वाणीया रो ख्याल संपूर्ण।। लिखतं छोगाला तिलोकचंद।। अमरचंद कनासुं उचार्या।। आसोप मध्यै।। -सूतवाल रो वगड़ी रा वासी रो ख्याल

(3)लिखते रंगीला छेला तिलांकचंद।। आसाणा नगरे।। पोती म्हात्मा तिलाकचंद री छैजी।। श्री तिलोकचंद लिखतं।। श्री रस्तू।। (सेठ दोय गोरियां रो ख्याल)

(4) अमरचंद उसताज नैस कांई : खुब बणायो खेल : बगतावर सींघजी ठाकुर थांरी : वधो सवाई वेल।।32।। चंपा गुलाब रो ख्याल संपूर्ण।। लि।। अलबेला छेला तिलोकचंद।। वाचे जीणसुं रांम रांम छै।। सं 1871 रा मीत चेतवद 7 (चंपा गुलाब रो ख्याल)

(5) ऐति श्री रंजा हीर रो ख्याल संपूर्ण। संवत् 1891 रा मीती पोहो सुद 15।। लि।। माहातमा तिलोकचंद आसोप मध्यै रात्रो लीख्यो छै।। पोथी तिलोकचंद री छै। (रंजा हीर रो तमासो)

ख्यालों का यह पूरा गुटका संवत् 1891 में लिखा गया था परन्तु उसके बाद भी लेखक द्वारा यदा कदा इन ख्यालों में थोड़ा बहुत अंश जोड़ा-बढ़ाया लगा जो हाशिये में, ऊपर-नीचे तथा कहीं-कहीं बीच-बीच में लिखा मिला। संवत् 1892 के फाल्गुन मास में कवि ने पदम कुंवर के ख्याल में, अंत में, कुछ और अंश जोड़ा जिसका लेखनकाल कवि ने इस प्रकार दिया है- संवत् अठारे बांणवे : फागुण मास मझार : तीलोकचंद तो खेल बणायो : कुसी वा नर नार : 19 तीलोकचंद तो खेल बणावै फाटो हुवो न्ही अपणा मन मे मसत है जका : सुदे मारग चाले : 20 इति संपूर्ण।।

-म.भा.

नौटंकी का नामरण कैसे पड़ा?

नौटंकी नामकरण के सम्बन्ध में कई बातें प्रचलित हैं। पंजाब के बादशाह की एक अत्यन्त रूपवती

शहजादी थी। वह इतनी नाजुक और कोमलांगी थी कि प्रतिदिन केवल नौटंका आहार लेने के कारण लोकजीवन में यह शहजादी नौटंकी के नाम से लोकप्रिय हुई। आगे जाकर इसी नौटंकी का एक युवक से प्रेम हो गया। नौटंकी नामक खेल में इस नौटंकी की कथा बहुचर्चित है।

यह भी कहा जाता है कि प्रारम्भ में नौटंकी ख्यालों में नौ प्रकार के वाद्य बजाये जाते थे अत: यह नाम पड़ा। एक किवदंती यह भी है कि इन ख्यालों में नौ नक्काड़े-नक्काड़ियों का प्रयोग किया जाता था। नक्काड़ों की प्रधानता तो इनमें आज भी मिलती है। राजस्थान के इन ख्यालों को इसीलिए 'नक्काड़ेबाजी के ख्याल' भी कहते हैं।

एक बात यह भी सुनने को मिलती है कि प्रारम्भ में इन ख्यालों में नक्काड़ों की प्रमुखता के साथ-साथ ढोलक, ढपली, सारंगी व चिकारा बजाया जाता था। इसमें तीन नक्काड़े बजाने वाले, दो ढोकल वाले, दो ढपली वाले तथा एक-एक सारंगी-चिकारा बजाने वाले होते थे। कुल नौ साजिन्दों के कारण ये ख्याल 'नौटंकी' के रूप में प्रचलित हुए।

राजस्थान का भरतपुर इलाका इन ख्यालों के लिए बड़ा प्रसिद्ध है। यहां डीग में इन ख्यालों का प्रचलन सर्वप्रथम भूरीलाल स्वर्णकार ने किया। हाथरस में भी इन्हीं भूरीलाल ने मुरलीधर हरनारायण की मण्डली में नौटंकी खेल प्रारम्भ किये। मुरलीधर हरनारायण दोनों अच्छे खिलाड़ी और ख्याल-लेखक थे। इनके लिखे नौटंकी, लक्ष्मण शक्ति, रूक्मिणी मंगल, मलखान का ब्याह, ढोला-मारू, लवकुश काण्ड, गूजरी तथा भाईगीर ख्यालों ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। भाईगीर के उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण भूरीलालजी की हाथी पर सवारी निकाली गई। डीग में आज भी भूरीलालजी का नाम स्मरण कराने पर वहां के लोग जमीन की माटी अपने सिर पर लगा कर उनके प्रति श्रद्धानत हो उठते हैं। भूरीलालजी संगीत के भी बड़े उस्ताद थे। कहते हैं, नौटंकी खेलों में एक बार नहीं, कई बार उन्होंने धूलिया मल्हार तथा मेघ मल्हार गाकर आंधी और बरसात को साक्षात कर दिया। नत्थाराम ने नौटंकी ख्यालों में सर्वाधिक प्रसिद्धि पाई। इन ख्यालों को पेशेवर बनाने का श्रेय भी इन्हीं को है। भरतपुर की सुप्रसिद्ध गिरिराज संगीत मण्डली के संचालन गिरिराज नत्थारामजी के प्रमुख शिष्य खिलाड़ी थे। नत्थारामजी ने नौटंकी के 35 के लगभग ख्याल लिखे। नौटंकी ख्यालों को इतना लोकप्रिय बनाने में भी इन्हीं का हाथ रहा है। इन ख्यालों में बेहरे तबील, दोहा, बेहरे शिक्स्त, लावणी सादी, लावणी लंगड़ी, जी की लावणी, कड़ा दबोला, चौबाला,

कव्वाली, गजल, दादरा, ठुमरी जैसे छन्दों की प्रधानता रहती है। राजस्थान में नौटंकी ख्यालों के साथ-साथ नौटंकी-स्वांग भी प्रचलित हैं।

-म.भा.

डॉ. ताराप्रकाश जोशी और मेरी सहयात्रा

- वेदव्यास -

डॉ. ताराप्रकाश जोशी (87) मेरी जीवन यात्रा के एक ऐसे आख्यान हैं, जिन्हें मैं कभी भुला नहीं सकता। जब वो आज हमारे बीच नहीं हैं, तो मैं अपने दुख और अकेलेपन को राहत देने के लिए उनसे जुड़ी कुछ बातें याद कर रहा हूं। वो उम्र में, अनुभव में, अध्ययन में और सृजन में मुझसे बहुत आगे थे। मैं 1971 में आकाशवाणी जयपुर में, अनुबंध कलाकार के रूप में काम करता था और कलाकारों की बंधुआ मजदूरी को लेकर न्याय और अधिकारों को लेकर धरने- प्रदर्शन और नारेबाजी किया करता था। मजदूर संगठन 'ऐटक' से जुड़े आकाशवाणी कलाकार संघ का अध्यक्ष था। यहीं पर शांति भंग की आशंका को लेकर आकाशवाणी प्रशासन, प्राय: पुलिस को बुलाया करता था और तारा प्रकाश जोशी नगर दंडनायक के रूप में वहां आया-जाया करते थे। यहीं से मेरी उनकी दोस्ती शुरू हुई थी।

इसी दौर में बांदा (उत्तरप्रदेश) के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के बाद भरतपुर में भी प्रगतिशील लेखक संघ का सम्मेलन आयोजित हुआ था। डॉ. ताराप्रकाश जोशी उसके संयोजक थे और डॉ. जगतपाल सिंह सह-आयोजक थे। डॉ. जोशी के आग्रह पर मैं भी उनके साथ काव्यपाठ के लिए तब भरतपुर गया था। वहीं पर 1973 में राजस्थान के लिए प्रगतिशील लेखक संघ का मुझे प्रथम संगठन संयोजक बनाया गया था। मेरा नाम डॉ. ताराप्रकाश जोशी ने ही प्रस्तावित किया था।

डॉ. ताराप्रकाश जोशी के साथ मेरी यह सहयात्रा किस तरह देश में प्रगतिशील साहित्य चेतना की मशाल बनी, उस इतिहास को हमारी पुरानी पीढ़ी अधिक और नई पीढ़ी कम जानती है। विगत को याद करते हुए-आज 53 साल बाद मुझे लगता है कि शायद हम दोनों ही एक-दूसरे के लिए बने थे। हमारे सामाजिक सरोकार ही हमें जोड़ते थे और हमारी चुनौतियां ही हमें विश्वसनीय बनाती थीं। ये ही समय था जब भारत की सभी भाषाओं में लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता का परचम-प्रगतिशील साहित्य चेतना से ओत-प्रोत था। 1936 से लेकर 2020 तक की ये सरगर्मी बताती है कि आज प्रगतिशील चेतना का संघर्ष आसमान से जमीन पर आ गया है और भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रगतिशील सपना एक नए वैश्विक-सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पराभाव और दमन से गुजर रहा है।

राजस्थान में डॉ. ताराप्रकाश जोशी और प्रगतिशील लेखक संघ आज इसीलिए मुझे प्रासंगिक लगते हैं क्योंकि समाज में अब विघटनकारी ताकतों का बोलबाला है। विचार केंद्रित सभी आवाजें बुझ गई हैं तो, संघर्ष का स्थान लेखक के जीवन को सरकार और बाजार के समझौतों में धकेल रहा है। हम अपने जीते जी ही अप्रासंगिक हो रहे हैं। ये समय मुझे अनिवार्यता और मुखरता की याद दिलाता है। हम दोनों ने अपना दायित्व इस तरह बांटकर आगे बढ़ाया था कि ताराप्रकाश जोशी तो श्रेष्ठ सृजन की पाठशाला चलाते थे और मैं कुशल संगठन संयोजक का कर्तव्य निभाता था। हम दोनों की इस जुगलबंदी का ही परिणाम था कि कभी राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़कर ही लेखक अपने का सम्पूर्ण मानता था। सैकड़ों कलम के सिपाही इस विचारधारा की मुहिम में बनते, उठते, लड़ते और बढ़ते मैंने देखे हैं। 1973 से 2020 तक ही हमारी साझा समझ से नई पीढ़ी को ये आग्रह करना चाहता हूं कि अब हम साहित्य, समाज और समय की नई आपदाओं को समझें और सृजन के पुनर्जागरण को नई आवाज दें।

डॉ. ताराप्रकाश जोशी मेरे ऐसे साथी और सलाहकार थे जिन्होंने कभी किसी सम्मान, पुरस्कार, अनुदान के लिए कहीं आवेदन नहीं किया और हम लोगों ने भी कभी उनके सृजनधर्म का मूल्यांकन नहीं किया। वे बेहद सहज, सरल और निर्भीक फकीर-दार्शनिक की तरह चलते-फिरते थे। वे हिन्दी के गीत साहित्य में परम्परा के परिष्कृत रचनाकार थे और गीतकारों को बहुत प्रेम करते थे। छल-बल और तिकड़बाजी से दूर रहकर, वे जीवन और जगत के सम-सामयिक व्याख्याकार गीतकार थे। साहित्य की उत्कृष्टता को भूलकर हम कहीं अपनी श्रेष्ठता को भी नकार रहे हैं।

डॉ. ताराप्रकाश जोशी मेरे ऐसे साथी और सलाहकार थे जिन्होंने कभी किसी सम्मान, पुरस्कार, अनुदान के लिए कहीं आवेदन नहीं किया और हम लोगों ने भी कभी उनके सृजनधर्म का मूल्यांकन नहीं किया। जोशीजी की पूरी काव्य चेतना के लिए उनका अंतिम गीत संग्रह 'प्रत्यूष की पदचाप' भी यदि आप पढ़ सकें तो मेरा अनुरोध सार्थक बन जाएगा। वे बेहद सहज, सरल और निर्भीक फकीर-दार्शनिक की तरह चलते-फिरते थे। वे हिन्दी के गीत साहित्य में परम्परा के परिष्कृत रचनाकार थे और गीतकारों को बहुत प्रेम करते थे। नई कविता की छंद मुक्त रचनाकारों के प्रति वो उत्साहित नहीं थे। छल-बल और तिकड़बाजी से दूर रहकर, वे जीवन और जगत के सम-सामयिक व्याख्याकार गीतकार थे। गीत के प्रति उनकी ईमानदारी और मनुष्य की उदासी का संघर्ष उन्हें आज भी स्मरणीय बनाता है। उन्होंने अपने प्रचार-प्रसार के लिए कभी कोई आयोजन-प्रायोजन नहीं करवाया और नई पीढ़ी को सदैव प्रोत्साहित किया।

जोशीजी 25 जनवरी, 1933 को जोधपुर में जन्में और 6 अक्टूबर, 2020 को जयपुर में दिवंगत हुए। वे मुझसे 8 साल बड़े थे और जयपुर के गुरु कमलाकर के साहित्य सदावर्त और डॉ. हरिराम आचार्य को अपना पारखी मानते थे और रांगेय राघव पर केंद्रित उनका मानवतावाद से प्रेरित शोध प्रबंध पढ़ने का आग्रह करते थे। आप उनकी अन्य पुस्तकें-कल्पना के स्वर, शंखों के टुकड़े, समाधि के प्रश्न, जलते अक्षर, जयनाथ (उपन्यास), द्वापर के आंसू, त्रेता का परिताप, जल मृग जल (नाटक) तथा दूधां (राजस्थानी नाटक) भी यदि पढ़ सकें तो आभार मानूंगा।

डॉ. ताराप्रकाश जोशी को राजस्थान की प्रगतिशील साहित्य की परम्परा का आधुनिक प्रतिनिधि गीतकार समझते हुए इस संक्षिप्त स्मरण में मैं फिर ये ही कहूंगा कि-हम अपने अंग्रेजों को भुलाने की आदत से बाहर आएं क्योंकि साहित्य की उत्कृष्टता को भूलकर हम कहीं अपनी श्रेष्ठता को भी नकार रहे हैं। राजस्थान में आज भी जोशीजी सबके प्रिय और सुमधुर गीतकार के रूप में स्थापित हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी ने 2012-13 में उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य मनीषी' देकर एक बार फिर ये प्रमाणित किया है कि हमारी काव्य परम्परा ही आने वाले समाज की प्रेरणा बनेगी। उनकी-मेरी जुगलबंदी ये थी कि -मेरे पांव तुम्हारे गति हो, फिर चाहे जो भी परिणति हो।

भीलों में गवरी

- डॉ. तुक्तक भानावत -

गवरी : भीलों में शिव-पार्वती को धरती पर बुलाने का नृत्यानुष्ठान है। यह उदयपुर खंड में निवास कर रहे आदिवासी भीलों का गौरी को आदिदेव महादेव सहित अपने आंगन में आमंत्रित करने का लोकरंगा उत्सव है। रक्षाबंधन के दूसरे दिन ठंडी राखी से प्रारंभ कर प्रत्येक अभिनेता खेल्या जहां-जहां भीलों की बहिन-बेटी ब्याही होती है, वहां-वहां इसके प्रदर्शन देता है। गांव-दर-गांव पूरे चालीस दिन गवरी खेली जाती है। गांव का कोई तिराहा, चौराहा या मंदिर प्रदर्शन स्थल बनता है। सुबह से शाम तक गवरी चलती रहती है। गांव की खुशहाली, सुकाल तथा सर्व मंगल, सर्व सुख की बढ़ोतरी ही गवरी प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य है।

इसका नायक बुड़िया तथा नायिका राई कहलाती है। राई बुड़िया शिव तथा भस्मासुर का प्रतीक एवं राइयां शक्ति एवं पार्वती रूपा होती हैं। सभी पुरूष पात्र होते हैं जो पूरे काल तक गवरीमय बने रह एक समय भोजन करते हैं। मद्य, मांस तथा लीलोती यानी हरी सब्जी आदि से दूर रहते हैं। न नहाते हैं, न पांव में जूते पहनते हैं। आंगन में सोते हैं और आदिदेव महादेव तथा देवी गवरजा की आराधना में लगे रहते हैं। कुल 40-50 तरह के सांग होते हैं जो बारी-बारी से अदलबदल कर नाना खेल तमाशे तथा लीलावलियों द्वारा राहगीरों का खासा मनोरंजन करते हैं।

लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि सन् 1948 में मैंने पहली बार अपने गांव के रावले में गवरी देखी। बुखार की हवा में मां ने मुझे देवी नारसिंघी के वाहन नार अर्थात् शेर कलाकार के धनुषाकार तने शरीर के बीच से निकाला। इसका असर यह हुआ कि घर पहुंचते-पहुंचते मेरा बुखार सदैव के लिए हवा हो गया। तब से लेकर अब तक खोज की पगडंडियां निरंतर बढ़ती रहीं और मैंने पाया कि गवरी से जुड़ी शिव-भस्मासुर की कथा भागवत पुराण, शिव पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, मार्कण्डेय पुराण आदि में भी बखूबी उल्लेखित है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृतिखंड में नायक शंखचूड़ का उल्लेख मिलता है। यही चूड़ धीरे-धीरे बूड़ के रूप में परिवर्तित होता गवरी में बुड़िया बन गया।

डॉ. भानावत ने बताया कि यह खासा अध्ययन का विषय है कि चौथी शताब्दी में उदयपुर के आसपास का इलाका मंदिर-संस्कृति का पूर्ण वैभव लिए था। यहां का उभयेश्वर मंडल मंदिरों के माहात्म्य का जीताजागता स्थल रहा जहां गौरीतांडव नृत्य ने अपनी प्रसिद्धि फैला रखी थी। जब इस संस्कृति का लोप होता दिखाई दिया तब मंदिर रक्षक भक्तों ने इसे लुप्त होने से बचाने का बीड़ा उठा संरक्षण दिया। यह घटना लोक और शास्त्र के बीच चोलीदामन का संबंध व्यक्त करती हैं। सच है, लोक में जब कोई विधा अपनी परिपक्वता तक पहुंचती है तब उसका शास्त्र निर्मित होता है और जब कोई शास्त्रीय विधा विलुप्ति के कगार पर पहुंचती है तब लोक ही उसका संरक्षक बनता है।

गवरी के प्रत्येक प्रदर्शन के प्रारंभ और अंत में अभिनेता मिलकर गोलाकार नृत्य करते हैं जिसे 'घाई' कहते हैं। गोलाकार पृथ्वी की गोलाई का सूचक है। पृथ्वी के कई नामों में एक नाम गहवरी है जो गवरी का ही द्योतक है। गवरी में देव, दानव, मानव, पशु तथा जलचर पात्रों की अवधारणा मिलती है। मुख्य स्वांगों में शंकर्या, कंजर-कंजरी, मीणा, नट, बणजारा, जोगी, कालबेलिया, बाणिया, कानगूजरी, कालूकीर, फत्ता-फत्ती, गोमा, बनवारी, पाईता, बांझड़ी, देवर-भौजाई,चपल्या चोर, हठिया और खेतु हैं। कुटकड़िया कुटकड़ाई कर संवाद का माध्यम बन गवरी को रसमय गति देता है।

लोकजीवन में गवरी राई के नाम से प्रसिद्ध रही। कहा जाता है कि गौरी का एक नाम राई था। भस्म होते भस्मासुर ने शिवजी के साथ अपना

नाम अमर रखने की इच्छा प्रकट की थी। इस पर शिवजी ने कहा-'तुम्हारी याद में जो राई का मंडल रचेगा उसमें स्वांग तुम्हारा और नाम मेरा होगा। उसका जो मुखिया होगा उसकी जटा तथा भगवा मेरा और खांडा व शीश तेरा रहेगा।'

लोकजीवन में राई मथनी को कहते हैं। मुख्य नायिका दोनों राइयां एक जैसे वेश विन्यास में साथ-साथ रहती हैं। जब नृत्य करती हैं तो लगता है जैसे मथनी की तरह फेरे ले रही हैं- उल्टे भी, सीधे भी, सीधे-उल्टे, उल्टे-सीधे, हमश्क्ल में।

गवरी का प्रदर्शन दिनभर सुस्ताते-सुस्ताते ठहर-ठहर कर, लहर-लहर होता है। यह प्रदर्शन पूरा नाट्यरूप है। थाली और मादल का गूंजता गहराता घोष प्रदर्शन में तन्मयता और उसकी संरचना को कसावट दिए रहता है। उसके ओज को उर्ध्वगामी अनुशासन से बांधे रखता है।

गाथा के अनुसार कुम्हार माटी की खोल लाता है। शिवजी उसके दोनों ओर चीते का चमड़ा लगा सर्वथा अनूठी आवाज निकालते हैं- तिंग, तिंग बातिंग, तातिंग। देवगण ताली बजाते हैं। वही ताली थाली बन गवरी के गुंजन को गुंफित किए रहती है।

प्रदर्शनकर्ता अपनी प्रस्तुति को रोचक और सारवान बनाए रखने हेतु नाना संकेतों द्वारा भावाभिव्यक्ति देते हैं। प्रसंग को रमणीय और भावानुकूल परचम देने के लिए नाच की कई-कई भंगिमाएं निकालते हैं। कभी झुकते हुए तो कभी उछाल खाते हुए, कभी लेटते हुए तो कभी दौड़ते, लपकते, उड़ी-गुड़ी खाते, किलकारी भरते, हाक देते नृत्य के करिश्मों से दर्शकों को लोटपोट कर देते हैं।

मादल और थाली से गवरी का पूरा घाई मंडल संचालित होता है। ऊब घाई से शुरू हुई गवरी हिंडोला घाई, आड़ी घाई, भगमल्या घाई, हणका घाई जैसे रूपों में रमझमाती हुई सांध्यकालीन लालीलछिया में खो जाती है।

मादल वादक मादलिया तंत्र-मंत्र का उस्ताद होता है जो गवरी को विपदाओं से बचाये रखता है। वह मूठ जैसी अनिष्टकारी एवं मारक शक्तियों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला करता है। देवी गवरजा अपने प्रतिनिधि भोपे के माध्यम से पूरे प्रदर्शन में उपस्थित रहती है।

गवरी के प्रारंभ में ही राईबुडिया स्तुति-गान द्वारा सभी देवी-देवताओं के सान्निध्य का आह्वान करता है। अदृश्य रूप में गणेश से लेकर खेड़ाखूंट, काला-गोरा, लालां-फूलां, मामादेव, राडा-रूपण, खाकल, ताखा, भूणा-मेंदू, लेमच-खेमच, आवरा-एलवा, गूना-मेनू, कालका, वरेकण, धरमराज, लटकाली, चौथ, पीपलाज आदि देवी-देवताओं की पधरावणी बनी रहती है।

इस प्रकार गवरी की देन कई दृष्टियों से बड़े महत्व की है। आदिवासी कला-संस्कृति के दरसाव के बहाने इसने लोकजीवन से आबद्ध लोकाचारों को लोकमय जीने का सिलसिलेवार सलीका प्रदान किया है।

बाजार / समाचार

रन फॉर जीरो हंगर के उद्धेश्य के साथ वेदांता ज़िंक सिटी हाफ मैराथन का सफल आयोजन

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा रन फॉर जीरो हंगर के उद्धेश्य से आयोजित वेदांता ज़िंक सिटी हॉफ मैराथन अभूतपूर्व सफलता के साथ आयोजित हुई। हजारों की संख्या में इस मैराथन में भाग लेने वालों के उल्लास ने जिंक सिटी उदयपुर में आयोजित इस दौड और शहर को वैश्विक दौड़ के मानचित्र पर मजबूती से स्थापित कर दिया। मैराथन में विश्व के एथलीट, भारतीय शीर्ष धावकों और दौड के शौकिन लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

मैराथन को उदयपुर सांसद मन्नालाल रावत, विधायक उदयपुर शहर ताराचंद जैन, विधायक उदयपुर ग्रामीण फूलसिंह मीणा, पुलिस महानिरीक्षक उदयपुर रेंज राजेश मीणा, आयुक्त नगर निगम उदयपुर राम प्रकाश, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी उत्तर-पश्चिम रेलवे शशि किरण, आयुक्त उदयपुर विकास प्राधिकरण राहुल जैन, आरटीओ उदयपुर नेमीचंद पारेख, हिन्दुस्तान ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा, फील्ड क्लब सचिव उमेश मनवानी एवं संस्थापक एनीबडी कैन रन डॉ. मनोज सोनी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

प्रतिभागियों ने फतहसागर झील की सुकून भरी सुबह और अरावली पर्वतमाला के सौंदर्य के साथ इस दौड़ का आनंद लिया जिसका मार्ग महाराणा प्रताप स्मारक, नीमच माता मंदिर पहाड़ी और हरे-भरे बगीचों की सुंदरता से परिपूर्ण था।

तीन श्रेणियों 21 किमी, 10 किमी और 5 किमी के साथ इस आयोजन में सभी स्तर के धावकों के लिए प्रावधान था। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण जिंक के प्रमुख जीवन तरंग कार्यक्रम के तहत 100 से अधिक दिव्यांग लोगों द्वारा प्रतिभागी बनना था। धावकों का उत्साहवर्धन करने के लिए उदयपुराईट्स ने भी अपना पूरा साथ देते हुए मैराथन के रास्ते पर सभी का जोश से स्वागत किया।

रोहित, मदीना, अजीत और खुशबु ने मारी बाजी :

पुरुष वर्ग में 21 किलोमीटर की कड़ी प्रतिस्पर्धा में रोहित बंसीवाल ने जीत हासिल की, जबकि विक्टर कुरगट ने प्रथम रनर अप और गोपाल बैरवा ने द्वितीय रनर अप का स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में मदीना पॉल ने जीत हासिल की, जबकि सोनल सुखवाल ने प्रथम रनर अप और खुशी पाहवा ने द्वितीय रनर अप का स्थान प्राप्त किया। पुरुष वर्ग में 10 किलोमीटर की चुनौती में अजीत कुमार ने जीत हासिल की, जबकि गणपत सिंह ने प्रथम रनर अप और दुर्गेंद्र ने द्वितीय रनर अप का स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में खुशबू ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया, जबकि सपना कुमारी ने प्रथम रनर अप और सुनीता गुर्जर ने द्वितीय रनर अप का स्थान प्राप्त किया।

सभी प्रतिभागियों को मिला ज़िंक से बना पदक :

प्रत्येक फिनिशर को हिंदुस्तान जिंक द्वारा उत्पादित बेहतरीन जिंक से बना पदक दिया गया। यह दिन फिटनेस, सौहार्द और सामुदायिक भावना से पूर्ण था जिसमें प्रतिभागियों ने चुनौती को अपनाते हुए उदयपुर की विरासत को संजोया। गणमान्य अतिथियों ने मैराथन की शुरूआत में उदयपुर की विरासत, दौड़ने के महत्व और ग्रामीण कुपोषण के खिलाफ लड़ाई के महत्व को रेखांकित किया। सांसद मन्नालाल रावत ने शहर के वैश्विक दौड़ मंच पर शहर के प्रमुख स्थान हेतु गर्व व्यक्त किया। शहर विधायक ताराचंद जैन ने मैराथन को उदयपुर के विकास में एक बड़ा कदम बताया। ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने बच्चों में कुपोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाने में इस आयोजन के महत्व पर बल दिया। महानिरीक्षक राजेश मीणा ने उदयपुर के सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में मैराथन के महत्व की सराहना की।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं उत्साही मैराथन धावक अरूण मिश्रा ने स्वयं मैराथन में 21 किलोमीटर की दौड़ पूरी की अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि मैं पूरी तरह से रोमांचित हूं कि इस आयोजन ने जिंक सिटी उदयपुर को अंतरराष्ट्रीय मैराथन मानचित्र पर मजबूती से स्थापित कर दिया है। दुनिया भर के हजारों लोगों के साथ इस मैराथन ने जिंक सिटी उदयपुर के सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत किया है। मैं इस मैराथन में आए लोगों और उदयपुर की सड़कों पर रन फॉर जीरो हंगर के प्रेरक संदेश से गौरवान्वित हूं, जिसने हमें राजस्थान में बच्चों का पोषण करने में सहायता की है।

मोटोरोला के स्मार्टफोन द बिग बिलियन डेज़ सेल में उपलब्ध

उदयपुर (ह. सं.)। मोटोरोला ने फ्लिपकार्ट की द बिग बिलियन डेज़ सेल से पहले अपने सबसे लोकप्रिय स्मार्टफोनों पर त्यौहारी छूट की घोषणा की है और नए रंगों के वेरिएंट पेश किए हैं। मोटोरोला ने अपने 'हेलो कलर्स, हेलो एआई' अभियान के तहत इन नए रंगों को पेश किया है, जिसमें इसके प्रीमियम, स्टाइलिश और जीवंत स्मार्टफोनों के अद्वितीय डिज़ाइन और रंग शामिल है। नए रंगों के वेरिएंट मोटोरोला एज50 प्रो, मोटोरोला एज50 फ्यूजन, मोटोरोला एज50 नियो, मोटो जी85 5जी और मोटो जी64 5जी के लिए है, और फिल्पकॉर्ट डॉट कॉम पर बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। ये उत्पाद 26 सितंबर से प्रारंभिक ग्राहकों के लिए और 27 सितंबर से द बिग बिलियन डेज़ सेल के दौरान सभी ग्राहकों के लिए विशेष रूप से फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध होंगे।

सबसे बड़ी बिग बिलियन डेज़ सेल डील की शुरुआत एक प्रीमियम स्मार्टफोन से की जा रही है, जिसमें मोटोरोला एज50 प्रो (12+256जीबी वेरिएंट, 125 वॉट चार्जर बॉक्स में) शामिल है, यह स्मार्टफोन जो 35,999 रुपये में मिलता है, अब केवल 27,999 रुपये(बैंक ऑफर्स सहित) की प्रभावी कीमत पर खरीदा जा सकता है, जो इसे बिग बिलियन डेज़ में प्रीमियम स्मार्टफोन पर सबसे अविश्वसनीय डील बनाती है। मोटोरोला एज50 प्रो दुनिया का पहला एआई - पावर्ड प्रो-ग्रेड कैमरा है, जिसका कलर आउटपुट पैनटोन द्वारा प्रमाणित है, और अब यह कैनेल बे कलर में भी उपलब्ध होगा। इसमें मोटो एआई द्वारा संचालित कैमरा दिया गया है, जिसमें दुनिया का पहला ट्रू कलर कैमरा भी है।

आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस पर संगोष्ठी

उदयपुर (ह. सं.)। साईं तिरूपति विश्वविद्यालय में पिम्स इंस्टिट्यूट ऑफ कम्प्यूटर साईसेंस द्वारा आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस पर फेकल्टी डेवलपमेंट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के सभी संघटक महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा फेकल्टी ने भाग लिया।

मुख्य व्यक्ता डॉ. अवनीश खरे ने चिकित्सा एवं पैरामेड़िकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस की संभावना, उपयोगिता, महत्व, प्रभाव, फायदे तथा चुनौतियों पर व्याख्यान दिया। कुलपति प्रो. डॉ. प्रशान्त नाहर ने विश्वविद्यालय की समस्त फेकल्टी को चिकित्सा विज्ञान तथा इससे जुडे फार्मेसी, नर्सिंग, पैरामेड़िकल, फिजीओथेरपी आदि क्षेत्रों मे तेजी से हो रहे विकास तथा ए.आई. जैसी नवीन तकनीकों को अपनाते हुए रोगों की जाँच, निदान व उपचार को और अधिक सुगम व सटीक बनाने का आह्वान किया। प्रारंभ मे अतिथियों डॉ. चन्द्रा माथुर, डॉ. सुरेश गोयल, डॉ. खेमचन्द गुप्ता, डॉ. विजयसिंह रावत, डॉ. मोहम्मद यूनुस ने दीप प्रज्वलन किया। पिम्स की डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। देवर्षि मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन ज्योति कटारिया व दीपक सिंदल ने किया।

सुजान जवाई दुनिया के 50 सर्वश्रेष्ठ होटलों की सूची में 43वें स्थान पर

उदयपुर (ह. सं.)। सुजान जवाई ने द वल्ड्र्स 50 बेस्ट होटल्स 2024 की वैश्विक रैंकिंग में 43वां स्थान हासिल किया है। यह रैंकिंग 2023 में शुरू हुई थी, और इस साल लंदन में एक भव्य पुरस्कार समारोह में 50 सर्वश्रेष्ठ होटलों की सूची का दूसरा संस्करण जारी किया गया। इस सूची में दुनिया के छह महाद्वीपों के नए और अनोखे होटलों को शामिल किया गया है।

समारोह में ट्रैवेल और हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री के लोग एकत्रित हुए और दुनिया के बेहतरीन होटलों का सम्मान किया। लंदन के ऐतिहासिक गिल्डहॉल में आयोजित इस समारोह ने होटल उद्योग के असाधारण अनुभवों को दिखाया, जो दुनिया भर के यात्रियों और होटल व्यवसायियों को प्रेरित करेंगे। सुजान जवाई, राजस्थान का एक प्रमुख वाइल्डरनेस कैंप है, जो यहां के वन्यजीवन और ग्रामीण जीवन के बीच संतुलित सहअस्तित्व का शानदार उदाहरण है। इस क्षेत्र में तेंदुए की प्रजातियां प्रमुख हैं, लेकिन यहां हिरण, लकड़बग्घे, मगरमच्छ और अन्य छोटे स्तनधारी जानवर भी देखने को मिलते हैं। साथ ही, यह इलाका पक्षियों के लिए स्वर्ग है, जहां 250 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें प्रवासी फ्लेमिंगो और सारस से लेकर रैप्टर्स और बी-ईटर्स तक शामिल हैं। यहां वन्यजीवन को नजदीक से देखने के साथ-साथ स्थानीय समुदायों से मिलने और उनकी संस्कृति को जानने का अनूठा अवसर मिलता है। इसके संस्थापक, जैसल और अंजलि सिंह हैं। द वल्ड्र्स 50 बेस्ट होटल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर, टिम ब्रूक-वेबने कहा कि लंदन में वल्ड्र्स 50 बेस्ट होटल्स के दूसरे संस्करण का आयोजन करना हमारे लिए बहुत खास है। इस रैंकिंग के साथ ही कई विशेष पुरस्कारों की भी घोषणा की गई है और इसमें 600 गुमनाम विशेषज्ञों के वोटों से संकलित दुनिया भर के सबसे बेहतरीन होटलों को शामिल किया जाता है। इस वोटिंग पैनल-50 बेस्ट होटल्स एकेडमी - में होटल व्यवसायी, यात्रा पत्रकार, शिक्षक और अनुभवी लग्ज़री यात्रियों का संतुलित मिश्रण शामिल है, जिसका नेतृत्व उद्योग-अग्रणी एकेडमी चेयर्स के एक समूह के द्वारा किया जाता है।

पांच लाख सीमांत किसानों की आय बढ़ाने का लक्ष्य

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल 'परिवर्तन' के तहत 2025 तक सालाना 60,000 रुपए से कम आय वाले 5 लाख सीमांत किसानों की आय बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब बैंक परिवर्तन के 10 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है, जिसने पहले ही पूरे भारत में 10 करोड़ से अधिक लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। ग्रामीण विकास पर बैंक का ध्यान सतत विकास को बढ़ावा देने और कमजोर समुदायों के उत्थान के लिए इसकी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एचडीएफसी बैंक के उप प्रबंध निदेशक कैजाद एम भरुचा ने बताया कि एचडीएफसी बैंक परिवर्तन में समुदाय को वापस देने के साथ-साथ सतत विकास का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित करने वाले कई कार्यक्रम शामिल हैं। अकेले वित्त वर्ष 2023-24 में, एचडीएफसी बैंक परिवर्तन ने 150 से अधिक एनजीओ भागीदारों और कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ काम किया है। एचडीएफसी बैंक की सीएसआर प्रमुख सुश्री नुसरत पठान ने कहा कि भारत की 65 प्रतिशत से ज़्यादा आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है, इसलिए हमारा दृढ़ विश्वास है कि समावेशी विकास तभी संभव है जब गांवों में समृद्धि और आजीविका विकास के साथ-साथ चलती रहे। हम अपने कार्यक्रमों के लिए ग्रामीण इलाकों को प्राथमिकता देते हैं और वर्तमान में हमारे 70 फ़ीसदी कार्यक्रम ऐसे ही इलाकों में लागू किए जा रहे हैं।

अर्थांक भानावत सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। होटल ताज फतहप्रकाश के दरबार हॉल में गत दिनों आयोजित हुए मेवाड़ गौरव सम्मान सीजन-3 में पब्लिक रिलेशन क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पार्श्वकल्ला पब्लिक रिलेशंस के निदेशक अर्थांक भानावत को पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने सम्मानित किया। समारोह में चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी

जोशी, उदयपुर सांसद डॉ. मन्नालाल रावत, मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, शहर विधायक ताराचंद जैन, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, पुलिस महानिरीक्षक अजयपाल लांबा, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत, जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल, एसपी योगेश गोयल, कांग्रेस प्रदेश महासचिव पंकज शर्मा, फर्स्ट इंडिया न्यूज एवं फर्स्ट इंडिया के सीईओ एवं मैनेजिंग एडिटर पवन अरोड़ा उपस्थित थे। स्वागत उद्बोधन उदयपुर रेजिडेंट एडिटर डॉ. रवि शर्मा ने दिया।

इतिहासकार डॉ. पांडेय के निधन पर शोक

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर के इतिहासकार पुरातत्व विशेषज्ञ डॉ. ललित पांडेय (70) के असामयिक निधन पर मेवाड़ के इतिहासकारों में गहरा शोक व्याप्त है।

मेवाड़ इतिहास परिषद, उदयपुर के अध्यक्ष वरिष्ठ इतिहासकार प्रो. गिरीशनाथ माथुर ने डॉ. ललित पांडेय के निधन को इतिहास एवं पुरातत्व जगत में अपूरणीय क्षति बताया। प्रो. माथुर ने बताया कि डॉ. ललित पांडेय साहित्य संस्थान, उदयपुर के निदेशक एवं राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार रहे। वर्तमान में विरासत संरक्षण (इंटेक) उदयपुर चैप्टर के अध्यक्ष थे। आहड़ सभ्यता की बालाथल इकाई (वल्लभनगर) की खुदाई में डॉ. पांडेय का महत्वपूर्ण शोधपरक योगदान रहा।

परिषद के महासचिव डॉ. मनोज भटनागर ने बताया कि डॉ. पांडेय ने मेवाड़ के पुरातत्व स्थल नामक पुस्तक लिखी और पुरातत्व से संबंधित कई शोध लिखें। डॉ. पांडेय के निधन पर ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के अध्यक्ष वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. जी. एल. मेनारिया, इतिहासकार डॉ. जमनेशकुमार ओझा, डॉ. कैलाश जोशी, डॉ. अजय मोची, डॉ. प्रियदर्शी ओझा, डॉ. अजातशत्रु शिवरती, डॉ. मीनाक्षी मेनारिया, डॉ. नीतू मेनारिया आदि ने गहरा शोक व्यक्त किया।

फ्लिपकार्ट त्योहारी सीजन की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने अपने बहुप्रतीक्षित द बिग बिलियन डेज (टीबीबीडी) 2024 के 11वें संस्करण की शुरुआत कर दी है। फ्लिपकार्ट वीआईपी और प्लस ग्राहकों के लिए 26 सितंबर को अर्ली एक्सेस (एक दिन पहले) के साथ 27 सितंबर से सभी ग्राहकों के लिए टीबीबीडी की शुरुआत हो गई है। अर्ली एक्सेस डे और पहले दिन कुल मिलाकर 33 करोड़ से ज्यादा यूजर विजिट्स देखने को मिले, जो देशभर के खरीदारों के त्योहारी उत्साह को दिखाता है। मोबाइल, फूड एंड न्यूट्रिशन और ग्रूमिंग कैटेगरी में बढ़ती मांग के साथ शुरुआती ट्रेंड्स आगे जबर्दस्त त्योहारी सीजन का संकेत दे रहे हैं।

फ्लिपकार्ट के वाइस प्रेसिडेंट ग्रोथ हर्ष चौधरी ने कहा कि हर साल भारत में त्योहारी सीजन की शुरुआत द बिग बिलियन डेज के साथ होती है, जो पूरे इकोसिस्टम को साथ लाता है। यह सिर्फ एक शॉपिंग फेस्टिवल नहीं बल्कि राष्ट्रीयस्तर पर विकास, नवाचार एवं गठजोड़ को बढ़ावा देने का अवसर है। विभिन्न वर्गों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। फ्लिपकार्ट ने भारत में डिजीटलीकरण के सफर को सक्षम बनाया है और द बिग बिलियन डेज की इसमें अहम भूमिका है। ग्राहकों एवं इकोसिस्टम पार्टनर्स के साथ अपने जुड़ाव को बढ़ाते हुए हम सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं, साथ ही ग्राहकों की संतुष्टि एवं कारोबारी सफलता के नए मानक स्थापित कर रहे हैं।

डॉ. दिलीप धींग को पारदर्शी साहित्य सम्मान

अंतरराष्ट्रीय जैन साहित्य संगम का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन लोढ़ा धाम, मुंबई में हुआ। 21 सितंबर को अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि, कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को पारदर्शी साहित्य सम्मान (2024) से सम्मानित किया। राज्यपाल ने डॉ. धींग को बधाई देते हुए कहा कि लिखा हुआ सदियों तक रहता है, इसलिए लिखने का महत्व बोलने से अधिक है। डॉ. धींग ने आभार-वक्तव्य में कहा कि पारदर्शी और उनकी रचनाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में साथ-साथ छपा करती थीं। उन्होंने कहा कि भारत में भाषाई लोकतंत्र एवं भाषाई अहिंसा की प्रतिष्ठा में प्राकृत का बुनियादी योगदान है।

समारोह में डॉ. धींग की दो कविताएँ दो कवियों ने उनकी बताकर प्रस्तुत की तो डॉ. धींग ने प्रतिकार किया। उन्होंने चिंता जताई कि कुछ साधु-साध्वी भी साहित्यिक ईमानदारी का पालन नहीं कर रहे हैं। डॉ. धींग ने साहित्य-साधना में ससंदर्भ प्रस्तुति और प्रामाणिकता की प्रेरणा दी।

डॉ. धींग को यह सम्मान ओम पारदर्शी फाउंडेशन, उदयपुर द्वारा उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। अध्यक्ष जगदीप जैन हर्षदर्शी ने प्रशस्ति पत्र में लिखा कि साहित्य मनीषी डॉ. धींग के अवदान बहुआयामी हैं। इस अवसर पर महाराष्ट्र शासन में मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, संगम की अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मंजू लोढ़ा, लोकेश मुनि सहित देशभर से बड़ी संख्या में जुटे कवि और साहित्यकार उपस्थित थे। अधिवेशन में लगी पुस्तक प्रदर्शनी में सर्वाधिक पुस्तकें डॉ. धींग की प्रदर्शित हुईं।

- इंदुबाला हर्षदर्शी

पारिश्रमिक का पहला मनीऑर्डर

विज्ञान का छात्र होते हुए भी मेरी सदैव से साहित्य में रुचि रही है। प्रारंभ में मेरी रचनाएं ऐसी पत्र पत्रिकाओं में छपती थीं जो पारिश्रमिक नहीं देती थीं। मेरे एक परिचित साहित्यकार ने मुझसे कहा कि अब आप ऐसी पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित करवावें जो स्तरीय हों व पारिश्रमिक भी देती हों। उस समय बुक स्टोर से मेरे हाथ एक हिंदी की मासिक पत्रिका 'रामतीर्थ' आई जो लेखकों को रचना छपने पर पत्रम पुष्पम् के रूप में राशि भी देती थी । मैंने एक लेख उसमें प्रकाशनार्थ भेजा। वह उस पत्रिका में प्रकाशित हुआ। संपादक ने एक लेख की प्रति और 10 रूपये की राशि मनीऑर्डर से भेजी। यह सन् 1963 की बात है। सस्ता जमाना था। मिठाई चार रुपए किलो मिलती थी। मैंने 10 रूपये की ढाई किलो मिठाई खरीदी और भगवान को भोग लगाकर स्वजनों एवं मित्रों में बांट दी। यह मेरी पहली लेखकीय कमाई थी। आज तो मेरी रचनाएं विविध पत्र पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। प्रकाशक पुस्तक भी प्रकाशित कर रहे हैं। सम्मान-पुरस्कार भी मिल रहे हैं पर जो प्रसन्नता पारिश्रमिक का पहला मनीऑर्डर मिलने पर मिली वह अविस्मरणीय है।

-डॉ. श्याममनोहर व्यास

चौधरी को पीएच.डी.

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय ने कुशलेश चौधरी को पंजायती राज व्यवस्था में युवाओं की भागीदारी तथा नवीन प्रवृत्तियों का एक अध्ययन: दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्र के युवाओं के विशेष संदर्भ में शोधकार्य करने पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की है। चौधरी ने अपना शोधकार्य डॉ. सुनील चौधरी के निर्देशन में किया।

डॉ. शर्मा अध्यक्ष बने

उदयपुर (ह. सं.)। जोधपुर में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय सम्मेलन राजपल्मोकॉन-2024 में गीतांजली मेडिकल कॉलेज के डॉ. ऋषिकुमार शर्मा ने बतौर अध्यक्ष भाग लिया। उन्होंने प्लूरल डिसऑर्डर में सर्जिकल इंटरवेंशन की उपयोगिता सम्बन्धित सत्र की अध्यक्षता की। डॉ शर्मा ने बताया कि प्लूरल डिसऑर्डर में विभिन्न सर्जिकल इंटरवेंशन प्रणालियों की मदद से रोग के निदान एवं उपचार में काफी सहायता मिलती है। इससे रोगी के शीघ्र स्वस्थ होने की संभावना बढ़ जाती है। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के श्वसन रोग विभाग में विभिन्न प्लूरल इंटरवेंशन जांचें सरकारी योजनाओं में निशुल्क उपलब्ध हैं।

नवरात्रा में.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इन दिनों प्रत्येक देवस्थल-देवरे को लींपाई-पुताई कर अच्छा बनाया जाता है। दीवारों पर चितराम मांडे जाते हैं। देवी-देवताओं को भी नया परिवेश दिया जाता है। उनके सिंदूर मालीपन्ना चढ़ाई जाती है। नई पोशाक धारण कराई जाती है। भोपा प्रतिदिन सुबह-शाम स्नान-ध्यान, सेवा-पूजा करता है। इस अवसर पर ढोल, थाली, नगाड़ा, शंख बजाया जाता है। पूजा पूरी होते ही अचानक भोपा कंपकंपी खाने लगता है। वह अपने हाथ में मोरपंख लेता है।

कभी सांकल पीठ पर मारता है। सिर को जोर-जोर से धुनता है। हाक, किलकारी मारता है। इसके पश्चात देवता के सम्मुख अपने आसन पर आ बैठता है। कुछ भोपे जब तक न्याय करते रहेंगे तब तक उनमें भाव-रूप शक्ति का अवतरण बना रहेगा। कुछ भोपों में कंपन आसन पर बैठते ही बंद हो जाती है। कुछ भोपे ऐसे भी देखे गये जिनमें कंपन होती ही नहीं। ज्योंही वे अपने आसन पर बैठते हैं कि उनमें शक्ति का संचरण हो आता है।

जितने भी जातरी देवरे में आते हैं वे सब अपने साथ मकई अथवा गेहूं की पोटली (मुट्ठी) अवश्य लाते हैं। एक-एक कर भोपा सबको बुलाता है और उनके दर्दों दुखों को सुनकर उनके सिर पर झाड़ू फटकार कर भभूत रूप में कंडे की धूप-बूझी राख तथा आखे-अक्षत यानी गेहूं-मकई के कणादि देकर उनका काम पूर्ण होने का आशीष देता है। आखे एकी की संख्या अर्थात् पांच, सात, नौ, ग्यारह के ही शुभ माने जाते हैं। इस संख्या वाले आखे 'मोती' कहलाते हैं। छह की संख्या वाले आखे 'जोड़' तथा आठ की संख्या वाले आखे ठीक नहीं समझे जाते हैं। मोती आखे के साथ यदि अल्या अर्थात् कचरा-कंकड़ आ जाता है तो यह समझ लिया जाता है कि मन में संकल्पित काम तो होगा पर उसमें कुछ बाधा आयेगी। भोपे को प्रत्येक व्यक्ति को आखे देने होते हैं। मोती आखे जब तक नहीं आते तब तक वह दूसरे आखे देता रहता है।

नवरात्रा में प्रतिदिन इन देवी-देवताओं के संबंध में इनकी शौर्यपरक गाथाएं गाई जाती है। ये गाथाएं 'भारत' कहलाती हैं। इसके साथ ढाक नामक वाद्य बजाया जाता है। यह ढाक डमरू के आकार की होती है जिसकी रस्सी बांये पांव के घुटने में डाल दी जाती है। घुटने के सहारे अंगुलियों पर टिकी यह ढाक दांये हाथ में रखी कमड़ी से तथा बांये हाथ की थाप से बजाई जाती है। ढाक ज्यों-ज्यों तेज होती जाती है त्यों-त्यों भारत की गायकी जोर पकड़ती जाती है और ज्यों-ज्यों भारत ऊं चाई की ओर पहुंचता है त्यों-त्यों वहां बैठे श्रोता-गायकों में से गाये जाने वाले भारत से संबंधित भोपे में शक्ति का अवतरण हो उठता है। भारत गायकी की सबसे बड़ी सफलता भी यही समझी जाती है। कहावत भी है-'गोड़ा में ढाक गमतीज नजर आवे, डाकण्यां रमतीज नजर आवे।' ढाक का इतना महत्व होने के कारण इन्हें 'ढाक भारत' भी कहते हैं। इनके साथ थाली भी बजाई जाती है। भारत का एक नाम 'वीर' भी है। इन्हें कहीं-कहीं 'माताजी के गीत' भी कहते हैं।

भारत गान के चमत्कार :

देव भारत में रेबारी, भेरूनाथ, राड़ा, रामदेव, केशरिया, वासक, रांगड्या, देवनारायण, ताखा, राईका, भूणा, मेंदू, मामादेव, ओगड़, नाथू, हडुमान, डेरावीर, भूत, गलालैंग तथा देवी भारत में चावण्डा, लालांफूलां, कालका, अंबाव, रूपण, मासीमां, लटकाली, मेलड़ी, शिकोतरी, चौथ, काछा, डाकणी, पीपलाज मुख्य है। इनके अतिरिक्त वेलावाणिया, चोर चपल्या मीणा, भारत बीड़ा, पूरवज, हठिया, बड़ल्या, माताजी थापना के भारत भी गाये जाते हैं। ये भारत अधूरे नहीं गाये जाते। अधूरा भारत गाने में दोष लगता है। पूरे भारत को 'घर-आसमान का भारत' तथा अधूरे भारत को 'उबदू' कहते हैं।

यदि कोई स्त्री मरकर घरवालों को परेशान करने लगे तो उसका शिकोतरा रखा जाता है। तब लाल कपड़े में नारियल लपेट, चूंदड़ ओढ़ा घर के आलिये में रख दिया जाता है। जब मृतका के पति की मृत्यु हो जाती है तब वह नारियल उसकी चिता के साथ जला दिया जाता है। यह शिकोतरा कहीं-कहीं शिकोतरी के नाम से भी पूजा जाता है। शिकोतरी एलम जानने वाले को ही आती है। माताजी, भेरूजी के भोपों को शिकोतरी नहीं चढ़ती।

जहां अन्य देवी-देवताओं के भोपों को गोळ, बींटी-अंगूठी धारण करना आवश्यक है वहां शिकोतरी के भोपे के लिए यह आवश्यक नहीं है। शिकोतरी का वाहन मुर्गा है। इसका भोपा शराब तथा रक्त का प्याला पीता है।

मेलड़ी काले मींडे की सवारी करती है। ओगड़ का खान-पान टट्टी-पेशाब है। यह शराब भी पीता है। इसके केसर की छांट दी जाती है। मिट्टी की बनी मूर्तियों पर सिंदूर चढ़ाया जाता है। पत्थर की मूर्तियों पर सिंदूर नहीं चढ़ा कर तेल चढ़ाया जाता है। रेबारी का मुख्य निशान गेड़िया, कालका का त्रिशूल, चगोतरी का केंकेड़ा, भेरूजी का गुरज, ओगड़ का चींपिया है। मोरपंख, सांकल प्राय: सभी दवी-देवताओं को प्रिय है।

भारत गाने के दौरान मैंने कई बार भोपों के शरीर में देवों का वास आते देखा है। रांगड्या के भारत के दौरान जब भारत गाथा खूब तेजी पर थी कि अचानक मेरे पास बैठा एक व्यक्ति जमीन से दो फुट की ऊंचाई छलांग बैठा। मैंने ऐसी जोर की हाक और उछलाहट कभी देखी-सुनी नहीं थी इसलिए मेरा भयभीत होना स्वाभाविक था। वह ज्योंही उछला कि पास बैठे चार व्यक्तियों ने उसे कठ्ठा पकड़ लिया। तब भी वह उन चारों को हिलाये रहा। उस अरनिया गांव में केवल मैं ही ऐसा व्यक्ति था जो उस दृश्य से डरा-थमा जा रहा था, शेष सभी छोटे-बड़ों पर उसका असर नहीं था अपितु कुछ लोग तो गालियों की भाषा में उससे सवाल कर रहे थे। कुछ देर बाद उसे तम्बाकू से ठांडी चिलम दी गई। वह कंपितावस्था में ही चिलम का धुंआ छोड़ता रहा और अंत में अपनी सामान्य स्थिति में आ गया। बाद में पता चला कि दला खारोल नामक वह जवान रांगड्या का भोपा था इसीलिए उसके नाम का भारत गाते ही वह कंपित हो उठा।

एक और मासीमां के भारत में भी मैंने इससे भी अजीब दृश्य देखा। तब एक साथ दो व्यक्ति चीख उठे और छलांगें मारते उस पूरे समुदाय के बीच चक्कर काटते रहे। ऐसे वातावरण में यदि कोई अजनबी हो और थोड़ा भावुक हो तो वह बेहोश ही हो जाय। मैं तब तक ऐसे वातावरण से अभ्यस्त हो चुका था नहीं तो मेरी स्थिति क्या होती उसका मैंने सहज ही अनुमान लगा लिया था। ये दोनों व्यक्ति मासीमां के भोपे थे इसलिए ज्योंही मासीमां का भारत अपनी चरम सीमा पर आया कि ये फफक पड़े।

4 अप्रेल 1975 को हमने कलामंडल के स्टूडियो में कुछ भारत रेकार्डिंग का कार्यक्रम रखा। रात दस बजे से सुबह चार बजे तक हमने इस दिन भारत रेकार्डिंग किये परन्तु बीच में रेकार्डिंग के दौरान बड़ी विचित्र घटना घटी जिसका उल्लेख मैं यहां आवश्यक समझ रहा हूं।

चौथमाता का भारत जब रेकार्डिंग किया जा रहा था कि अचानक शोभालाल नामक व्यक्ति अपना एक हाथ जमीन पर टेककर दूसरे हाथ से पूरा शरीर कंपाते, बीड़ी पीते, एक आंख के हल्की-हल्की चोट देते भारत गाता रहा। इसी समय बड़ी खूबी में उसने पूरे स्टूडियो की चकरी ली और सबका ध्यान चुराते हुए भेरा से थाली छीनकर फैंक दी। इतने में भजा में रेबारी प्रवेश हो आया। उसने चोरी नहीं करने दी। इधर लालजी भोपे ने अपनी कमीज उतारी और चगोतरी (शिकोतरी) को कुछ मंत्रों के साथ बुलाया कि चौथ माता भागती बनी। भागते-भागते वह सबके पांव पड़ी। इधर रेबारी ने बीच में पानी पिया और ढाक बजाना बंद कर दिया। इससे लगता है कि इन देवी-देवता के बीच में भी कई तरह की श्रेणियां हैं जो एक-दूसरे से बड़े-छोटे और अपनी-अपनी मर्यादा-सीमा लिए हैं। उस दिन का वह दृश्य आज भी मेरे मन पर अमिट छाया हुआ है।

भारत-अध्ययन :

भारत का मेरा यह अध्ययन मेवाड़ क्षेत्र का अधिक है। ये भारत सभी जातियों में समूहबद्ध गाये-बजाये जाते हैं। मेरी अध्ययन यात्रा में वरदा हमावत (13.10.69), गोरदा भील (ऊसरवास 14.10.69), परताब, हीरा, चैना कालबेलिया (कूंटवा 15.10.69), कसना मेघवाल, मन्ना मीणा, भजा रावत (अरनिया 11.10.67), लखमा रावत (पालोद 12.10.67), लालू सालवी, लोगर्या गमेती, नंगा सालवी, जेत्या गमेती (उदयपुर), नगजी (झाड़ोल-जयसमंद 4.4.74) तथा उनके गांवों के अन्य गायकों को सुनने तथा पूछताछ करने का विशेष योग रहा है।

भारत का मेरा यह अध्ययनन आज भी जारी है। गवरी खेल में विविध स्वांगों के साथ गाई जाने वाली गाथा 'भारत' ही कहलाती है। सन् 1973 में बीकानेर की डॉ. सुशीला गुप्ता ने राजस्थानी लोक महाभारत विषय पर डॉ. नरेन्द्र भानावत के निर्देशन में राजस्थान विवि से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। दो विशाल खंडों में उनका यह अध्ययन अप्रकाशित है। भारत विषयक मेरी पुस्तकें- 'काला गोरा रो भारत', 'लोकनाट्य गवरी', 'ताखा अंबाव रो भारत', 'देवनारायण रो भारत', 'पांडवों का भारत' प्रकाशित हैं।

PIMS
HOSPITAL UMARDA

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा, उदयपुर

सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल
(NABH द्वारा प्रमाणित हॉस्पिटल)

घुटना, कुल्हा, कंधा, जॉइंट रिप्लेसमेंट का निःशुल्क इलाज मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के अंतर्गत किया जाता है।

हड्डी एवं जोड़ रोग विभाग

अनुभवी विशेषज्ञों की सेवाएं

डॉ. बी. एल. कुमार
सीनियर प्रोफेसर
एवं हेड ऑर्थोपेडिक
पिम्स

डॉ. लक्ष्मी नारायण
प्रोफेसर
ऑर्थोपेडिक
पिम्स

सेवाएं :

- **मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में कुल्हा, कंधा और घुटने का प्रतिस्थापन।**
- **घुटना, कुल्हा, कंधा व जोड़ प्रत्यारोपण-** एडवांस इम्प्लान्ट्स, छोटे चीरे के द्वारा सर्जरी, एडवांस फिजियोथेरेपी।
- **फ्रेक्चर व एक्सीडेन्ट-** किसी भी तरह के फ्रेक्चर, आपातकालीन सर्जरी सुविधा।
- **लिगामेन्ट इन्जरी -** लिगामेन्ट रिपेयर, लिगामेन्ट रिकन्सेंट्रेशन, कन्धा, घुटना, कोहनी टखना आदि की इंजरी।
- **पोलियो -** रिकन्सट्रेक्टिव सर्जरी
- **स्पाइन सर्जरी-** रीढ़ की हड्डी के फ्रेक्चर, रीढ़ की हड्डी का खिसकना, रीढ़ की सभी प्रकार की सर्जरी, डिस्क सर्जरी - डिस्क का खिसकना, लम्बर व सर्वाइकल स्पाईन, सायटिका-लम्बर केनाल स्टेनोसिस, रूट ब्लॉक।
- **जन्मजात विकलांगता -** टेढ़े-मेढ़े पैर (CTEV), बच्चों में कुल्हे के जोड़ का सरकना (DDH). पैरो की हड्डी का टेढ़ापन, सेरेब्रल पाल्सी की कन्सट्रेक्टिव सर्जरी।
- **स्पोर्ट इन्जरी -** किसी प्रकार का घुटना, टखना, कोहनी, कन्धा, कलाई, कुल्हे की चोट एवं मसल स्ट्रेन दूरबीन द्वारा जोड़ों का उपचार (ऑर्थोस्कापी) लिगामेन्ट, गद्दी, घुटने व कन्धे की दूरबीन द्वारा सर्जरी।

टीबी एवं श्वास रोग विभाग

डॉ. सानिध्य टांक
असिस्टेंट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ़ रेस्पिरेटरी मेडिसिन
M.B.B.S., M.D. गोल्ड मेडलिस्ट
चेस्ट फिजिशियन एवं इंटरनॅशनल
पल्मोनोलोजिस्ट (पूर्व विशेषज्ञ AIIMS)

सुविधाएँ- • **थोरैकोस्कोपी** {दूरबीन द्वारा फेफड़ो की जाँच} • **ब्रोंकोस्कोपी** {दूरबीन द्वारा फेफड़ो की जाँच}

- सांस की समस्या (ILD / COPD)
- अस्थमा एवं एलर्जी
- सिलिकोसिस
- टीबी का मुफ्त इलाज
- निमोनिया
- बुखार, खाँसी, जुकाम
- खरटि आना और सम्बंधित समस्याएं
- कोविड और कोविड के बाद के लक्षण
- फेंफड़ों में पानी / हवा भरना
- धूल एवं धुएं से एलर्जी के बाद के लक्षण
- छाती का कैंसर
- स्पाइरोमेट्री
- DLCO
- स्वास की पुरी जाँच {Body Plethysmography}
- स्वास गहन चिकित्सा इकाई
- स्वास सम्बंधित सभी समस्याओ का इलाज

सुपरस्पेशियलिटी सुविधाएँ

• कार्डियक केयर सेन्टर • न्यूरो सर्जरी • नेफ्रोलोजी • कैंसर सर्जरी • यूरोलॉजी • गेस्ट्रोएंटरोलॉजी • न्यूरोलॉजी • प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी • जनरल एवं लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी

सरकारी योजनाओं में निःशुल्क इलाज
सभी इंश्योरेंस एवं टीपीए कैशलैस इलाज के लिए अधिकृत हॉस्पिटल।

PIMS HOSPITAL UMARDA
पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

इमरजेंसी : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
उमरड़ा रेलवे स्टेशन रोड़, उदयपुर (राज)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।